CBSE Class 12 Hindi Core Question Paper 2015 with Solution PDF-Set 2/2/1

Question Paper with Solutions

Conducted by the Central Board of Secondary Education (CBSE)

निर्धारित समय: 3 Hours **अधिकतम अंक: 106**

सामान्य निर्देश

(i) इस प्रश्न-पत्र में कुल 14 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(ii) प्रश्न 4, 6, 7, 8, 9, 11 में आंतरिक विकल्प दिया गया है; ऐसे प्रश्नों में केवल एक विकल्प का उत्तर दीजिए।
(iii) प्रश्नों में दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए उत्तर लिखिए।
(iv) प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दर्शाए गए हैं।

1. भारत प्राचीनतम संस्कृति का देश है । यहाँ दान पुण्य को जीवनमुक्ति का अनिवार्य अंग माना गया है । जब दान देने को धार्मिक कृत्य मान लिया गया तो निश्चित तौर पर दान लेने वाले भी होंगे । हमारे समाज में भिक्षावृत्ति की ज़िम्मेदारी समाज के धर्मात्मा, दयालु व सज्जन लोगों की है ।

भारतीय समाज में दान लेना व दान देना – दोनों धर्म के अंग माने गए हैं । कुछ भिखारी खानदानी होते हैं क्योंकि पुश्तों से उनके पूर्वज धर्म स्थानों पर अपना अड्डा जमाए हुए हैं । कुछ भिखारी अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के हैं जो देश में छोटी-सी विपत्ति आ जाने पर भीख का कटोरा लेकर भ्रमण के लिए निकल जाते हैं । इसके अलावा अनेक श्रेणी के और भी भिखारी होते हैं ।

कुछ भिखारी परिस्थिति से बनते हैं तो कुछ बना दिए जाते हैं । कुछ शौकिया भी इस व्यवसाय में आ गए हैं । जन्मजात भिखारी अपने स्थान निश्चित रखते हैं । कुछ भिखारी अपनी आमदनी वाली जगह दूसरे भिखारी को किराए पर देते हैं । आधुनिकता के कारण अनेक वृद्ध मज़बूरीवश भिखारी बनते हैं । ग़रीबी के कारण बेसहारा लोग भीख माँगने लगते हैं । काम न मिलना भी भिक्षावृत्ति को जन्म देता है । कुछ अपराधी बच्चों को उठा ले जाते हैं तथा उनसे भीख मँगवाते हैं । वे इतने हैवान हैं कि भीख माँगने के लिए बच्चों का अंग-भंग भी कर देते हैं ।

भारत में भिक्षा का इतिहास बहुत पुराना है । देवराज इन्द्र व विष्णु श्रेष्ठ भिक्षुकों में थे । इन्द्र ने कर्ण से अर्जुन की रक्षा के लिए उनके कवच व कुण्डल ही भीख में माँग लिए । विष्णु ने वामन अवतार लेकर भीख माँगी । धर्मशास्त्रों ने दान की महिमा का बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन किया जिसके कारण भिक्षावृत्ति को भी धार्मिक मान्यता मिल गई । पूजा-स्थल, तीर्थ, रेलवे स्टेशन, बस-स्टैण्ड, गली-मुहल्ले-आदि हर जगह भिखारी दिखाई देते हैं । इस कार्य में हर आयु का व्यक्ति शामिल है । साल-दो साल के दुध मुँहे बच्चे से लेकर अस्सी-नब्बे वर्ष के बूढ़े तक को भीख माँगते देखा जा सकता है ।

भीख माँगना भी एक कला है, जो अभ्यास या सूक्ष्म निरीक्षण से सीखी जा सकती है । अपराधी बाकायदा इस काम की ट्रेनिंग देते हैं । भीख रोकर, गाकर, आँखें दिखाकर या हँसकर भी माँगी जाती है । भीख माँगने के लिए इतना आवश्यक है कि दाता के मन में करुणा जगे । अपंगता, कुरूपता, अशक्तता, वृद्धावस्था आदि देखकर दाता करुणामय होकर परंपरानिर्वाह कर पुण्य प्राप्त करता है । [15 अंक]

1(क). गद्यांश का समुचित शीर्षक दीजिए । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शीर्षक गद्यांश के केंद्रीय विषय का संक्षिप्त परिचय देता है।
- उचित शीर्षक में पूरे गद्यांश का आशय समाहित होना चाहिए।

चरण 1: केंद्रीय विषय पहचानना गद्यांश में दान की धार्मिक मान्यता, भिखारियों की श्रेणियाँ, भीख माँगने के कारण तथा दाता की करुणा का वर्णन है। इन सभी प्रसंगों का केंद्र भिक्षावृत्ति है। केवल दान या गरीबी शीर्षक रखने से अन्य प्रसंग छूट जाएँगे।

चरण 2: शीर्षक चुनने का आधार लेखक ने भारत में भिक्षा की प्राचीन परंपरा से लेकर वर्तमान सामाजिक स्वरूप तक का परिचय दिया है। इसलिए ऐसा शीर्षक उपयुक्त होगा जो देश और इस सामाजिक प्रवृत्ति दोनों को स्पष्ट करे।

चरण 3: निष्कर्ष समुचित शीर्षक है—भारत में भिक्षावृत्ति।

त्वरित सुझाव: शीर्षक चुनते समय हर अनुच्छेद का साझा विषय पहचानें; किसी एक उदाहरण को पूरे गद्यांश का विषय न मानें।

1(ख). "भारत में भिक्षा का इतिहास प्राचीन है" — सप्रमाण सिद्ध कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कथन की पुष्टि गद्यांश में दिए गए उदाहरणों से करनी चाहिए।
- पौराणिक उदाहरण यहाँ भिक्षा की प्राचीन परंपरा के प्रमाण के रूप में प्रस्तुत हैं।

चरण 1: प्राचीन उदाहरण पहचानना गद्यांश में देवराज इन्द्र और भगवान विष्णु को श्रेष्ठ भिक्षुकों में गिना गया है। इन्द्र ने अर्जुन की रक्षा करने के उद्देश्य से कर्ण से उनके कवच और कुण्डल भिक्षा में माँगे थे। यह प्रसंग बताता है कि भिक्षा माँगने का उल्लेख प्राचीन धार्मिक

कथाओं में भी मिलता है।

चरण 2: दूसरे प्रमाण से कथन पुष्ट करना विष्णु ने वामन अवतार में भिक्षा माँगी थी। साथ ही धर्मशास्त्रों में दान की महिमा का वर्णन किया गया है। गद्यांश के अनुसार इसी परंपरा ने भिक्षावृत्ति को धार्मिक मान्यता दी। उत्तर में इन उदाहरणों को प्राचीनता से जोड़ना चाहिए; केवल आज के भिखारियों की चर्चा इस प्रश्न का प्रमाण नहीं बनेगी।

चरण 3: निष्कर्ष इन्द्र द्वारा कर्ण से कवच-कुण्डल माँगने और विष्णु द्वारा वामन अवतार में भिक्षा माँगने के उदाहरण सिद्ध करते हैं कि भारत में भिक्षा का इतिहास प्राचीन है।

त्वरित सुझाव: सप्रमाण प्रश्न में पहले दोनों पौराणिक प्रसंग लिखें, फिर उन्हें भिक्षा की प्राचीनता से स्पष्ट रूप से जोड़ें।

1(ग). "भीख माँगना एक कला है" — इस कला के विविध रूपों का उल्लेख कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न में कला के रूपों से आशय भीख माँगने की विभिन्न युक्तियों से है।
- गद्यांश में वर्णित तरीकों और उनके उद्देश्य को साथ बताना चाहिए।

चरण 1: कला सीखने का आधार गद्यांश के अनुसार भीख माँगने की कला अभ्यास और सूक्ष्म निरीक्षण से सीखी जा सकती है। अपराधी इस काम का बाकायदा प्रशिक्षण भी देते हैं। इससे स्पष्ट है कि लेखक केवल हाथ फैलाने की क्रिया नहीं, बल्कि दूसरे की प्रतिक्रिया देखकर व्यवहार बदलने की युक्ति की बात करता है।

चरण 2: विविध रूप और प्रभाव भीख रोकर, गाकर, आँखें दिखाकर अथवा हँसकर माँगी जाती है। कभी दयनीय दशा सामने रखी जाती है। अपंगता, कुरूपता, अशक्तता और वृद्धावस्था देखकर दाता के मन में करुणा उत्पन्न होती है। इन रूपों का उद्देश्य किसी तरह दाता को प्रभावित कर उससे भिक्षा प्राप्त करना है। उत्तर में भिखारियों की श्रेणियों के बजाय इन व्यवहारों को लिखना आवश्यक है।

चरण 3: निष्कर्ष भीख माँगने की कला के विविध रूप हैं—रोना, गाना, आँखें दिखाना और हँसना। दयनीय दशा दिखाकर दाता की करुणा जगाना भी इसी कला का अंग है।

त्वरित सुझाव: विविध रूप पूछे जाने पर रोकर, गाकर, आँखें दिखाकर और हँसकर—ये चारों तरीके स्पष्ट रूप से लिखें।

1(घ). समाज में भिक्षावृत्ति बढ़ाने में हमारी मान्यताएँ किस प्रकार सहायक होती हैं ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कारणपरक प्रश्न में मान्यता और उसके सामाजिक परिणाम का संबंध समझाना चाहिए।
- उत्तर गद्यांश में वर्णित दान, पुण्य और जीवनमुक्ति की धारणाओं पर आधारित है।

चरण 1: मान्यताओं का परिचय हमारे समाज में दान-पुण्य को जीवनमुक्ति का अनिवार्य अंग माना गया है। दान देना ही नहीं, दान लेना भी धर्म का अंग समझा जाता है। धर्मशास्त्रों में दान की महिमा का बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन हुआ है। इस कारण भिक्षा माँगने की प्रथा को धार्मिक समर्थन और सामाजिक स्वीकार्यता मिल जाती है।

चरण 2: भिक्षावृत्ति बढ़ने की प्रक्रिया दयालु व्यक्ति भिखारी की असहाय दशा देखकर करुणामय हो जाता है। वह दान देकर परंपरा का निर्वाह और पुण्य की प्राप्ति मानता है। जब दान को लगातार धार्मिक कृत्य मानकर दिया जाता है, तब दान लेने वाले भी बने रहते हैं। इस प्रकार हमारी पुण्य प्राप्त करने की धारणा अनजाने में भिक्षावृत्ति को जारी रखने में सहायक होती है।

चरण 3: निष्कर्ष दान लेने और देने को धर्म तथा दान को मुक्ति और पुण्य का साधन मानने से भिक्षावृत्ति को धार्मिक मान्यता मिलती

है; इसी कारण लोग भिक्षा देकर इसे बढ़ावा देते हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में केवल दया न लिखें; दान से पुण्य और मुक्ति मिलने की मान्यता को भिक्षावृत्ति के बढ़ने से जोड़ें।

1(ङ). भिखारी व्यवसाय के विभिन्न स्वरूपों का उल्लेख कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- वर्गीकरण में गद्यांश में दी गई अलग-अलग श्रेणियों को पहचानना आवश्यक है।
- भिक्षावृत्ति के स्वरूपों में परंपरा, विवशता, शौक और अपराधजनित स्थिति सम्मिलित हैं।

चरण 1: परंपरागत और व्यवसायिक स्वरूप कुछ भिखारी खानदानी होते हैं, जिनके पूर्वज पीढ़ियों से धार्मिक स्थलों पर अड्डा जमाए रहते हैं। कुछ अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर देश की छोटी-सी विपत्ति के नाम पर भीख माँगने निकल पड़ते हैं। शौकिया भिखारी भी इस व्यवसाय में आ जाते हैं। जन्मजात भिखारी अपना स्थान निश्चित रखते हैं और कुछ अपनी आमदनी वाली जगह दूसरे भिखारी को किराए पर भी देते हैं।

चरण 2: विवशता और अपराध से जुड़े स्वरूप कुछ लोग परिस्थितिवश भिखारी बनते हैं। आधुनिकता के कारण असहाय हुए वृद्ध, गरीबी से पीड़ित बेसहारा व्यक्ति और काम न पाने वाले लोग भिक्षा माँगते हैं। इसके विपरीत कुछ लोगों को जबरन भिखारी बनाया जाता है। अपराधी बच्चों को उठाकर उनसे भीख मँगवाते हैं और इसके लिए उनका अंग-भंग तक कर देते हैं। इस प्रकार सभी भिखारियों के इस काम में आने के कारण समान नहीं हैं।

चरण 3: निष्कर्ष भिखारी व्यवसाय के स्वरूप हैं—खानदानी, अन्तर्राष्ट्रीय, शौकिया, निश्चित स्थान वाले, स्थान किराए पर देने वाले, परिस्थितिवश बने तथा अपराधियों द्वारा जबरन बनाए गए भिखारी।

त्वरित सुझाव: स्वरूपों को दो समूहों में याद रखें—परंपरा या व्यवसाय से जुड़े भिखारी और विवशता या अपराध से बने भिखारी।

1(च). भिखारी दाता के मन में किस भाव को जगाते हैं और क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भाव पूछे जाने पर उसका स्पष्ट नाम तथा उसे जगाने का उद्देश्य दोनों लिखना चाहिए।
- गद्यांश में दाता की करुणा और उसकी पुण्य प्राप्ति की धारणा का संबंध बताया गया है।

चरण 1: जगाए जाने वाले भाव की पहचान भिखारी दाता के मन में करुणा अर्थात दया का भाव जगाते हैं। अपनी अपंगता, कुरूपता, अशक्तता अथवा वृद्धावस्था के कारण वे दयनीय दिखाई देते हैं। यह दशा देखकर दाता उनकी पीड़ा और असहायता से प्रभावित होता है। रोना या गाना जैसे तरीके भी उसका ध्यान खींचने के लिए अपनाए जाते हैं।

चरण 2: इस भाव का उद्देश्य स्पष्ट करना दाता जब करुणामय होता है तो वह भिक्षा देने के लिए प्रेरित हो जाता है। गद्यांश के अनुसार वह ऐसा करके परंपरा का निर्वाह करता है और पुण्य प्राप्त करने का अनुभव करता है। इसलिए करुणा जगाना भिक्षा प्राप्त करने की प्रमुख शर्त बताया गया है। यहाँ भाव और कारण अलग हैं—भाव करुणा है और उसे जगाने का लक्ष्य दाता से भीख पाना है।

चरण 3: निष्कर्ष भिखारी दाता के मन में करुणा जगाते हैं, ताकि वह उनकी दयनीय दशा से प्रभावित होकर भिक्षा दे तथा परंपरा-निर्वाह और पुण्य प्राप्ति का अनुभव करे।

त्वरित सुझाव: किस भाव और क्यों—इन दोनों हिस्सों के उत्तर दें: पहले करुणा लिखें, फिर भिक्षा देने की प्रेरणा समझाएँ।

1(छ). आपके विचार से भिक्षावृत्ति से कैसे छुटकारा पाया जा सकता है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सुझाव गद्यांश में बताए गए कारणों के अनुरूप और व्यावहारिक होने चाहिए।
- गरीबी, बेरोजगारी, असहाय वृद्धावस्था तथा बच्चों से जबरन भिक्षा मँगवाना अलग समस्याएँ हैं।

चरण 1: आर्थिक और सामाजिक कारणों के उपाय भिक्षावृत्ति घटाने के लिए बेसहारा लोगों को रोजगार, प्रशिक्षण और आजीविका के अवसर दिए जाने चाहिए। असमर्थ वृद्धों और अशक्त व्यक्तियों के लिए आश्रय, भोजन तथा नियमित देखभाल की व्यवस्था हो। इससे गरीबी, काम न मिलना और उपेक्षित वृद्धावस्था जैसी विवशताओं के कारण भीख माँगने की आवश्यकता कम होगी।

चरण 2: शोषण रोकना और सहायता का रूप बदलना बच्चों का अपहरण करके उनसे भिक्षा मँगवाने वाले अपराधियों पर कठोर कार्रवाई हो और बच्चों को सुरक्षा तथा शिक्षा मिले। समाज को केवल पुण्य की भावना से भिक्षा देने के बजाय जरूरतमंदों के पुनर्वास में सहयोग देना चाहिए। सहायता ऐसी हो जो व्यक्ति को आत्मनिर्भर बनाए। ये सुझाव गद्यांश में उल्लिखित कारणों को दूर करने की दिशा में हैं।

चरण 3: निष्कर्ष रोजगार और पुनर्वास, वृद्धों तथा अशक्तों की देखभाल, बच्चों की सुरक्षा और अपराधियों पर कार्रवाई से भिक्षावृत्ति कम की जा सकती है। दान को आत्मनिर्भरता बढ़ाने वाली सहायता में बदलना भी आवश्यक है।

त्वरित सुझाव: हर सुझाव को गद्यांश के एक कारण से जोड़ें—बेरोजगारी से रोजगार और बाल-शोषण से सुरक्षा तथा शिक्षा।

1(ज). उपसर्ग-प्रत्यय अलग कीजिए : बाकायदा, धार्मिक । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उपसर्ग मूल शब्द के पहले जुड़ता है और प्रत्यय मूल शब्द के अंत में।
- प्रत्यय लगने पर कभी मूल शब्द के स्वर में परिवर्तन भी होता है।

चरण 1: बाकायदा की रचना बाकायदा में बा उपसर्ग है और कायदा मूल शब्द है। बा शब्द के आरंभ में जुड़कर कायदे के अनुसार होने का अर्थ देता है। अतः इसका विभाजन बा + कायदा है। यहाँ शब्द के अंतिम अंश को प्रत्यय नहीं समझना चाहिए।

चरण 2: धार्मिक की रचना धार्मिक में धर्म मूल शब्द और इक प्रत्यय है। इक प्रत्यय लगने पर धर्म के अ का आ हो जाता है और धार्मिक रूप बनता है। इसलिए केवल दिखने वाले धार्म को मूल शब्द कहना उचित नहीं; मूल शब्द धर्म ही है।

चरण 3: निष्कर्ष बाकायदा = बा (उपसर्ग) + कायदा (मूल शब्द)। धार्मिक = धर्म (मूल शब्द) + इक (प्रत्यय)।

त्वरित सुझाव: धार्मिक को अलग करते समय स्वर-परिवर्तन का ध्यान रखें; मूल शब्द धर्म है और प्रत्यय इक है।

1(झ). संयुक्त वाक्य में बदलिए — ग़रीबी के कारण बेसहारा लोग भीख माँगने लगते हैं । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संयुक्त वाक्य में दो स्वतंत्र उपवाक्य किसी समुच्चयबोधक शब्द से जुड़े होते हैं।
- रूपांतरण करते समय मूल वाक्य का कारण और परिणाम वाला संबंध सुरक्षित रखा जाता है।

चरण 1: मूल वाक्य के आशय की पहचान मूल वाक्य में ग़रीबी कारण है और बेसहारा लोगों का भीख माँगने लगना उसका परिणाम है। यहाँ ग़रीबी के कारण पदबंध है, स्वतंत्र उपवाक्य नहीं। इसलिए इसे क्रियायुक्त कथन में बदलना होगा।

चरण 2: दो स्वतंत्र उपवाक्य जोड़ना पहला उपवाक्य बनता है—बेसहारा लोग ग़रीब हैं। दूसरा उपवाक्य है—वे भीख माँगने लगते हैं। दोनों अपने आप में पूर्ण कथन हैं। इन्हें इसलिए से जोड़ने पर कारण और परिणाम का संबंध स्पष्ट रहता है। केवल क्योंकि जोड़कर आश्रित उपवाक्य बनाने से संयुक्त वाक्य नहीं बनेगा।

चरण 3: निष्कर्ष बेसहारा लोग ग़रीब हैं, इसलिए वे भीख माँगने लगते हैं।

त्वरित सुझाव: कारण वाले पदबंध को स्वतंत्र वाक्य बनाकर परिणाम से इसलिए द्वारा जोड़िए।

---

2. शांति नहीं तब तक, जब तक
सुख-भाग न सबका सम हो ।
नहीं किसी को बहुत अधिक हो
नहीं किसी को कम हो ।
स्वत्व माँगने से न मिले,
संघात पाप हो जाएँ ।
बोलो धर्मराज, शोषित वे
जिएँ या कि मिट जाएँ ?
न्यायोचित अधिकार माँगने
से न मिले, तो लड़ के
तेजस्वी छीनते समय को,
जीत, या कि ख़ुद मर के ।
किसने कहा पाप है ? अनुचित
स्वत्व-प्राप्ति-हित लड़ना ?
उठा न्याय का खड्ग समर में
अभय मारना-मरना ? [5 अंक]

2(क). कवि के अनुसार शांति के लिए क्या आवश्यक शर्त है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पद्यांश का आरंभ शांति की स्थापना को सुख के समान वितरण से जोड़ता है।
- उत्तर में कवि की स्पष्ट शर्त लिखनी है, सामान्य उपदेश नहीं।

चरण 1: निर्णायक पंक्तियाँ पहचानना कवि कहता है—"शांति नहीं तब तक, जब तक सुख-भाग न सबका सम हो। इस कथन में शांति के लिए सबको सुख का समान अवसर मिलना आवश्यक बताया गया है।

चरण 2: शर्त का अर्थ स्पष्ट करना अगली पंक्तियों में किसी को बहुत अधिक और किसी को कम सुख न मिलने की बात है। इसका आशय है कि समाज में सुख-सुविधाओं का असमान बँटवारा समाप्त हो और सबके न्यायोचित हितों की रक्षा हो। ऐसी समता के बिना असंतोष बना रहेगा।

चरण 3: निष्कर्ष शांति के लिए आवश्यक है कि सभी का सुख-भाग समान हो; किसी को बहुत अधिक और किसी को बहुत कम न मिले।

त्वरित सुझाव: उत्तर में सुख-भाग की समानता और अधिक-कम का भेद मिटने की बात साथ लिखिए।

2(ख). युद्ध क्षेत्र को तेजस्वी किस प्रकार छीन लेते हैं ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यह प्रश्न तेजस्वी व्यक्तियों के साहस और अधिकार प्राप्त करने की दृढ़ता को समझने का है।
- व्याख्या पद्यांश की जीत अथवा आत्मबलिदान वाली पंक्ति पर आधारित होगी।

चरण 1: संघर्ष की स्थिति पहचानना कवि बताता है कि न्यायोचित अधिकार केवल माँगने से न मिलें तो तेजस्वी व्यक्ति संघर्ष करते हैं। वे अन्याय के सामने निष्क्रिय होकर नहीं बैठते और अपना अधिकार प्राप्त करने के लिए साहस दिखाते हैं।

चरण 2: विजय और बलिदान का भाव स्पष्ट करना "जीत, या कि ख़ुद मर के में विजय पाने अथवा अपने प्राणों का बलिदान करने तक का संकल्प व्यक्त हुआ है। अत: युद्ध क्षेत्र में उनका आधार निर्भय संघर्ष है। पद्यांश अधिकार प्राप्ति के लिए जोखिम उठाने की तत्परता को महत्त्व देता है।

चरण 3: निष्कर्ष तेजस्वी निर्भय होकर लड़ते हैं और विजय प्राप्त करके अथवा स्वयं प्राणों का बलिदान करके युद्ध क्षेत्र छीन लेते हैं।

त्वरित सुझाव: जीत या ख़ुद मर के का भाव लिखकर तेजस्वियों का निर्भय संघर्ष स्पष्ट कीजिए।

2(ग). न्यायोचित अधिकार के लिए मनुष्य को क्या करना चाहिए ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- न्यायोचित अधिकार वह उचित हक है जिससे किसी को वंचित नहीं किया जाना चाहिए।
- पद्यांश माँगने पर अधिकार न मिलने की दशा में संघर्ष की आवश्यकता बताता है।

चरण 1: पहला उपाय पहचानना पंक्ति "न्यायोचित अधिकार माँगने से न मिले से स्पष्ट है कि व्यक्ति पहले अपना उचित अधिकार माँगता है। प्रश्न में किसी अनुचित लाभ या दूसरों के अधिकार छीनने की बात नहीं है।

चरण 2: अधिकार न मिलने पर कर्तव्य समझना जब माँगने से भी उचित अधिकार नहीं मिलता, तब मनुष्य को अन्याय सहते रहने के बजाय साहसपूर्वक संघर्ष करना चाहिए। कवि न्याय का खड्ग उठाने की बात कहकर शोषण के प्रतिरोध को उचित ठहराता है। संघर्ष का उद्देश्य न्याय और अपने स्वत्व की रक्षा है।

चरण 3: निष्कर्ष मनुष्य को अपना न्यायोचित अधिकार माँगना चाहिए और न मिलने पर उसकी प्राप्ति के लिए निर्भय होकर संघर्ष करना चाहिए।

त्वरित सुझाव: माँगने पर न मिले वाली शर्त जोड़िए, ताकि उत्तर कवि के कथन के अनुरूप रहे।

2(घ). कृष्ण युधिष्ठिर को युद्ध के लिए क्यों प्रेरित कर रहे हैं ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- धर्मराज को संबोधन शोषितों के जीवन और उनके अधिकारों के प्रश्न से जुड़ा है।
- उत्तर में युद्ध की प्रेरणा का आधार न्याय की रक्षा और अन्याय का प्रतिरोध है।

चरण 1: धर्मराज के सामने रखी समस्या कथन "बोलो धर्मराज, शोषित वे जिएँ या कि मिट जाएँ? में शोषितों की असहाय स्थिति पर प्रश्न उठाया गया है। यदि उन्हें उचित अधिकार न मिले और वे प्रतिरोध भी न करें, तो उनके अस्तित्व पर संकट बना रहेगा।

चरण 2: प्रेरणा का उद्देश्य स्पष्ट करना कृष्ण युधिष्ठिर को समझा रहे हैं कि न्यायोचित अधिकार प्राप्त करने के लिए संघर्ष करना पाप नहीं है। इसलिए अन्याय और शोषण को समाप्त करने तथा वंचितों के अधिकार बचाने के लिए युद्ध की प्रेरणा दी जा रही है। इसका लक्ष्य निजी लालच नहीं, न्याय की स्थापना है।

चरण 3: निष्कर्ष कृष्ण युधिष्ठिर को अन्याय और शोषण के विरुद्ध लड़कर न्यायोचित अधिकार प्राप्त करने के लिए प्रेरित कर रहे हैं, क्योंकि न्याय की रक्षा का संघर्ष पाप नहीं है।

त्वरित सुझाव: प्रेरणा के कारण में शोषितों की रक्षा और न्यायोचित अधिकारों की प्राप्ति अवश्य जोड़िए।

2(ङ). यदि आपको अधिकार से अन्यायपूर्वक वंचित किया जाता है तो आपको क्या करना चाहिए ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न पद्यांश के न्याय और स्वत्व संबंधी विचार को अपने आचरण से जोड़ता है।
- उत्तर का केंद्र अपने उचित अधिकार की रक्षा है, अनुचित लाभ की इच्छा नहीं।

चरण 1: अन्याय की पहचान और अधिकार की माँग यदि मुझे मेरे उचित अधिकार से अन्यायपूर्वक वंचित किया जाए, तो मैं चुपचाप अन्याय स्वीकार नहीं करूँगा। मैं अपना पक्ष स्पष्ट करूँगा और न्यायसंगत अधिकार की माँग करूँगा। यह पद्यांश के स्वत्व संबंधी विचार का पहला व्यावहारिक पक्ष है।

चरण 2: न्याय के लिए दृढ़ रहना माँगने पर भी अधिकार न मिलने की स्थिति में मैं साहस और दृढ़ता से न्याय के लिए संघर्ष करूँगा। उचित माध्यमों से अन्याय का प्रतिरोध करूँगा और अपने अधिकार की रक्षा करूँगा। कवि की प्रेरणा है कि भय या निराशा के कारण व्यक्ति अपना न्यायोचित हक न छोड़ दे।

चरण 3: निष्कर्ष मैं अपना उचित अधिकार माँगूँगा और न मिलने पर निर्भय होकर अन्याय का प्रतिरोध करते हुए न्याय प्राप्ति के लिए संघर्ष करूँगा।

त्वरित सुझाव: अपने उत्तर को मैं शैली में लिखिए और अधिकार की माँग तथा संघर्ष दोनों स्पष्ट कीजिए।

3(क). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए : वरिष्ठ नागरिक और नई पीढ़ी [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निबंध में विषय का परिचय, उसके मुख्य पक्ष और सार्थक निष्कर्ष क्रमबद्ध रूप से आते हैं।
- इस विषय में वरिष्ठ नागरिकों के अनुभव और नई पीढ़ी की ऊर्जा के बीच सहयोग का महत्त्व स्पष्ट करना है।

चरण 1: रूपरेखा और विषय-विस्तार भूमिका में दोनों पीढ़ियों का समाज में महत्त्व बताना उचित होगा। मुख्य भाग में परिवार की बदलती परिस्थितियाँ, संवाद का अभाव, बुज़ुर्गों की आवश्यकताएँ और युवाओं की जिम्मेदारियाँ रखें। साथ ही नई पीढ़ी की समस्याओं को समझने की आवश्यकता भी बताएँ। अंत में पारस्परिक सम्मान, सहयोग और संवेदनशीलता पर आधारित समाधान दें।

चरण 2: पूर्ण आदर्श निबंध वरिष्ठ नागरिक और नई पीढ़ी

समाज की प्रगति केवल नई उपलब्धियों से नहीं, बल्कि अपने अनुभवी सदस्यों के प्रति व्यवहार से भी पहचानी जाती है। वरिष्ठ नागरिक जीवन के अनुभवों की धरोहर हैं और नई पीढ़ी ऊर्जा, कल्पना तथा उत्साह का स्रोत है। दोनों के सहयोग से परिवार और समाज अधिक सशक्त बन सकते हैं।

आज शिक्षा और रोज़गार के कारण अनेक युवा घर से दूर रहते हैं। छोटे परिवारों और व्यस्त दिनचर्या के बीच बुज़ुर्ग कभी-कभी अकेलापन अनुभव करते हैं। उन्हें केवल आर्थिक सहायता नहीं, अपनापन, सम्मान और बातचीत का समय भी चाहिए। उनकी शारीरिक सीमाओं और

स्वास्थ्य संबंधी आवश्यकताओं को समझना नई पीढ़ी का दायित्व है।

युवा उनके साथ समय बिताकर, नियमित संपर्क रखकर और दैनिक कार्यों में सहायता देकर उनका जीवन सहज बना सकते हैं। अस्पताल जाने, आवश्यक दवाएँ लेने और डिजिटल सेवाओं का उपयोग करने में सहयोग विशेष उपयोगी है। तकनीक सिखाते समय अधीर होने के बजाय धैर्य रखना चाहिए। उनके अनुभव सुनने से युवाओं को कठिन परिस्थितियों में निर्णय लेने की समझ भी मिलती है।

दूसरी ओर, वरिष्ठ नागरिकों को भी बदलते समय की आवश्यकताओं को स्वीकार करना चाहिए। युवाओं के विचारों और व्यवसाय के चुनाव को केवल अपनी परंपरागत कसौटी पर परखना उचित नहीं है। सलाह तब अधिक प्रभावी होती है जब उसमें स्नेह हो, दबाव नहीं। मतभेदों को संवाद से सुलझाकर दोनों पीढ़ियाँ एक-दूसरे की स्वतंत्रता का सम्मान कर सकती हैं।

विद्यालयों, मोहल्लों और सामाजिक संस्थाओं को ऐसी गतिविधियाँ आयोजित करनी चाहिए जिनमें युवा और वरिष्ठ नागरिक मिलकर काम करें। पुस्तक-पाठ, स्थानीय इतिहास की चर्चा, पौधरोपण और सामुदायिक सेवा उनके बीच निकटता बढ़ा सकते हैं। सार्वजनिक स्थानों तथा सेवाओं को भी बुज़ुर्गों के लिए सुलभ बनाया जाना चाहिए।

वरिष्ठ नागरिकों की उपेक्षा करना अपने अनुभव-संसार को खोना है। नई पीढ़ी का सम्मान करना भविष्य पर विश्वास करना है। जब अनुभव और उत्साह का मेल होगा, तब परिवार में आत्मीयता तथा समाज में संवेदनशीलता बढ़ेगी। यही संबंध दोनों पीढ़ियों के लिए सुरक्षा, संतोष और प्रगति का आधार बन सकता है।

चरण 3: निष्कर्ष वरिष्ठ नागरिकों और नई पीढ़ी के बीच संवाद, सम्मान और सहयोग से ही पीढ़ियों की दूरी घटेगी तथा परिवार और समाज सुदृढ़ बनेंगे।

त्वरित सुझाव: निबंध में केवल युवाओं के कर्तव्य न गिनाएँ; दोनों पीढ़ियों के सहयोग और ठोस उपाय भी लिखिए।

3(ख). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए : सबसे बड़ा सुख : स्वतन्त्रता [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विचारप्रधान निबंध में विषय का अर्थ स्पष्ट करके व्यक्तिगत, सामाजिक और राष्ट्रीय पक्षों को क्रमबद्ध अनुच्छेदों में विकसित किया जाता है।
- स्वतंत्रता का वास्तविक अर्थ विवेकपूर्ण निर्णय और सम्मानपूर्ण जीवन है। अधिकारों के साथ उत्तरदायित्व जोड़ने पर विचार संतुलित बनता है।

चरण 1: निबंध की रूपरेखा बनाइए शीर्षक के बाद प्रस्तावना में स्वतंत्रता और सुख का संबंध स्थापित कीजिए। मुख्य भाग में पराधीनता की पीड़ा, राष्ट्रीय स्वतंत्रता का महत्त्व, व्यक्ति की अभिव्यक्ति और सामाजिक समानता पर विचार रखिए। अंत में स्वतंत्रता की मर्यादा और उसकी रक्षा का संकल्प दीजिए। प्रश्न में कोई निश्चित शब्दसीमा नहीं है; इसलिए विषय का पर्याप्त विस्तार करते हुए अनावश्यक पुनरावृत्ति से बचना उचित है।

चरण 2: पूर्ण आदर्श निबंध लिखिए **सबसे बड़ा सुख : स्वतंत्रता**

मनुष्य सुख की खोज में धन, प्रतिष्ठा और सुविधाएँ अर्जित करता है, किंतु स्वतंत्रता के बिना ये सभी उपलब्धियाँ अधूरी हैं। जिसके विचारों पर पहरा हो और जिसकी इच्छाओं का निर्णय कोई दूसरा करे, वह सुखी कैसे हो सकता है? स्वतंत्रता मनुष्य को अपने व्यक्तित्व का विकास करने और सम्मान के साथ जीने का अवसर देती है।

पराधीन व्यक्ति अपनी प्रतिभा होते हुए भी उसका इच्छित उपयोग नहीं कर पाता। इसी प्रकार पराधीन राष्ट्र के संसाधन और श्रम प्रायः शासक के हित में लगते हैं। भारत ने लंबे संघर्ष और असंख्य बलिदानों के बाद स्वतंत्रता प्राप्त की। इस संघर्ष का उद्देश्य केवल शासन बदलना नहीं, बल्कि लोगों को अपने भविष्य का निर्माण करने का अधिकार देना भी था। इसलिए राष्ट्रीय स्वतंत्रता हमारे सामूहिक सम्मान की आधारशिला है।

स्वतंत्रता का संबंध दैनिक जीवन से भी है। अपनी बात कहने, शिक्षा प्राप्त करने, आजीविका चुनने और अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाने की स्वतंत्रता व्यक्ति को आत्मविश्वास देती है। समाज में जाति, लिंग, गरीबी या भय के कारण यदि किसी को अवसर नहीं मिलता, तो उसके लिए स्वतंत्रता का सुख अधूरा रह जाता है। सच्ची स्वतंत्रता तभी सार्थक है जब उसका लाभ कमजोर और वंचित व्यक्ति तक पहुँचे।

किंतु स्वतंत्रता मनमानी का नाम नहीं है। दूसरों के अधिकारों का उल्लंघन करके हम अपने अधिकार सुरक्षित नहीं रख सकते। विचारों की स्वतंत्रता के साथ संवाद का शिष्टाचार और कर्म की स्वतंत्रता के साथ सामाजिक उत्तरदायित्व आवश्यक है। कानून का सम्मान, कर्तव्यपालन और सहिष्णुता स्वतंत्र जीवन को सुरक्षित बनाते हैं।

इस प्रकार स्वतंत्रता सबसे बड़ा सुख है, क्योंकि वही अन्य सुखों को अर्थ देती है। हमें अपनी स्वतंत्रता के प्रति सजग रहते हुए दूसरों की गरिमा और अधिकारों का सम्मान करना चाहिए। तभी स्वतंत्रता सबके लिए सुख, आत्मसम्मान और प्रगति का आधार बन सकेगी।

चरण 3: निष्कर्ष निबंध स्वतंत्रता को आत्मसम्मान, व्यक्तित्व-विकास और राष्ट्रीय प्रगति का आधार बताते हुए उसके साथ उत्तरदायित्व का संतुलन स्थापित करता है।

त्वरित सुझाव: इस विषय में केवल स्वतंत्रता-संग्राम का वर्णन न करें; व्यक्ति के अधिकार, समान अवसर और स्वतंत्रता की मर्यादा भी जोड़ें।

3(ग). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए : हिन्दी हमारी अस्मिता [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अस्मिता का अर्थ अपनी पहचान और उसके प्रति सजगता है। भाषा व्यक्ति को स्मृति, संस्कृति, साहित्य और समाज से जोड़कर उसकी पहचान को अभिव्यक्त करती है।
- विषयप्रधान निबंध में हिन्दी की भूमिका का विवेचन करते समय भारत की भाषायी विविधता का सम्मान और भाषा के व्यावहारिक विकास की आवश्यकता दोनों स्पष्ट होने चाहिए।

चरण 1: विषय और अनुच्छेदों का क्रम निश्चित कीजिए प्रस्तावना में भाषा और पहचान का संबंध बताइए। मुख्य भाग में हिन्दी के साहित्य, जनजीवन, संपर्क और आधुनिक उपयोग का विवेचन कीजिए। भारतीय भाषाओं के प्रति सम्मान बनाए रखते हुए हिन्दी के विकास के उपाय रखिए। उपसंहार में भाषा को व्यवहार में अपनाने का संदेश दीजिए। निबंध का शीर्षक विषयानुकूल होगा और विचार अनुच्छेदों में लिखे जाएँगे; पत्र की तरह संबोधन या हस्ताक्षर नहीं होंगे।

चरण 2: पूर्ण आदर्श निबंध लिखिए **हिन्दी हमारी अस्मिता**

भाषा केवल बोलने और लिखने का साधन नहीं, हमारे अनुभवों और सांस्कृतिक स्मृतियों का घर भी है। उसके माध्यम से हम संसार को समझते और अपने भाव व्यक्त करते हैं। हिन्दी हमारे विशाल जनसमुदाय की ऐसी ही भाषा है, जिसमें जीवन की सहजता, लोकसंस्कृति और सामूहिक चेतना ध्वनित होती है। इसलिए हिन्दी से जुड़ना अपनी पहचान के एक महत्त्वपूर्ण पक्ष से जुड़ना है।

हिन्दी का साहित्य हमारी संवेदनाओं को समृद्ध करता है। कबीर की निर्भीक वाणी, तुलसी की लोकचेतना और प्रेमचंद का सामाजिक यथार्थ हमें मनुष्य और समाज को समझने की दृष्टि देते हैं। लोकगीतों, कहावतों और बोलियों में पीढ़ियों के अनुभव सुरक्षित हैं। हिन्दी इन विविध अभिव्यक्तियों से शक्ति पाती है और हमारी सांस्कृतिक निरंतरता बनाए रखने में योगदान देती है।

हिन्दी अनेक क्षेत्रों के लोगों के बीच संपर्क का माध्यम भी है। जनसंचार, साहित्य, सिनेमा और सार्वजनिक संवाद के माध्यम से यह अलग-अलग पृष्ठभूमियों के व्यक्तियों को जोड़ती है। भारत की राजभाषा के रूप में भी इसका महत्त्व है। किंतु भारत बहुभाषी देश है; उसकी पहचान किसी एक भाषा तक सीमित नहीं की जा सकती। हिन्दी का सम्मान तभी सार्थक है जब हम अन्य भारतीय भाषाओं और उनके बोलने वालों का भी उतना ही सम्मान करें।

आज शिक्षा, विज्ञान, व्यापार और तकनीक में हिन्दी के उपयोग की संभावनाएँ बढ़ी हैं। हमें गुणवत्तापूर्ण पाठ्यसामग्री, सरल अनुवाद और उपयोगी डिजिटल सामग्री तैयार करनी चाहिए। केवल भाषा के गौरव का उद्घोष पर्याप्त नहीं है। यदि हम पढ़ने, लिखने और ज्ञान अर्जित करने में उसका नियमित प्रयोग करें, तो उसका विकास स्वाभाविक रूप से होगा। दूसरी भाषाएँ सीखना उपयोगी है, पर इसके लिए अपनी भाषा से संकोच करना आवश्यक नहीं।

हिन्दी हमारी अस्मिता की सजीव अभिव्यक्ति है। उसे समृद्ध बनाना अपने अनुभवों, साहित्य और सामाजिक संबंधों को समृद्ध बनाना है। भाषायी उदारता, रचनात्मक प्रयोग और निरंतर अध्ययन के साथ हम हिन्दी को आधुनिक आवश्यकताओं के अनुकूल विकसित कर सकते हैं। यही उसके प्रति हमारा सच्चा सम्मान होगा।

चरण 3: निष्कर्ष हिन्दी सांस्कृतिक स्मृति, साहित्य और संपर्क की भाषा के रूप में हमारी पहचान को व्यक्त करती है। उसका विकास अन्य भारतीय भाषाओं के सम्मान और ज्ञान के विविध क्षेत्रों में सक्रिय प्रयोग के साथ होना चाहिए।

त्वरित सुझाव: हिन्दी की अस्मिता समझाते समय साहित्य और जनजीवन का उदाहरण दें; भाषा के गौरव को अन्य भाषाओं के प्रति सम्मान से जोड़कर संतुलित निष्कर्ष लिखें।

3(घ). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए : भारतीय खेल [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विषयप्रधान निबंध में भूमिका, विषय का क्रमबद्ध विस्तार और उपसंहार होता है। भारतीय खेलों पर लिखते समय उनकी विविधता, उपयोगिता और वर्तमान चुनौतियों को संतुलित रूप से प्रस्तुत करना चाहिए।
- कबड्डी, खो-खो और कुश्ती जैसे खेल भारतीय परंपरा से जुड़े हैं। खेलों का महत्त्व केवल पदक जीतने में नहीं, बल्कि स्वास्थ्य, सहयोग और अनुशासन के विकास में भी है।

चरण 1: विषय की सीमा और प्रारूप निर्धारित करना निबंध का शीर्षक 'भारतीय खेल' रखें। भूमिका में जीवन और भारतीय संस्कृति में खेलों का स्थान बताएँ। मुख्य भाग में परंपरागत खेलों के उदाहरण, उनके शारीरिक तथा सामाजिक लाभ, आधुनिक खेलों में भागीदारी और खिलाड़ियों की कठिनाइयों का विवेचन करें। अंत में सुधार के व्यावहारिक उपाय देते हुए आशापूर्ण निष्कर्ष लिखें। बिना प्रमाण के आँकड़े या उपलब्धियाँ जोड़ने के स्थान पर स्पष्ट तर्क और परिचित उदाहरण रखें।

चरण 2: पूर्ण आदर्श निबंध **भारतीय खेल**

खेल मनुष्य के जीवन में स्वास्थ्य, उत्साह और संतुलन लाते हैं। भारत में खेलों की समृद्ध परंपरा रही है। गाँव के खुले मैदान से लेकर अंतरराष्ट्रीय स्टेडियम तक खेल हमारी प्रतिभा और सामूहिक चेतना की अभिव्यक्ति हैं।

कबड्डी, खो-खो, कुश्ती और मल्लखंभ जैसे खेल भारतीय जीवन से गहरे जुड़े हैं। इनसे शरीर में स्फूर्ति, साहस और सहनशक्ति आती है। कई परंपरागत खेल कम साधनों में खेले जा सकते हैं, इसलिए आर्थिक स्थिति के भेद के बिना अधिक बच्चों को उनमें भाग लेने का अवसर मिलता है। शतरंज बुद्धि, एकाग्रता और दूरदर्शिता को विकसित करता है।

आज भारत में हॉकी, क्रिकेट, बैडमिंटन, निशानेबाजी और अनेक अन्य खेल भी लोकप्रिय हैं। खिलाड़ियों की उपलब्धियाँ देशवासियों में आत्मविश्वास जगाती हैं। टीम के खेल हमें सहयोग, नियमों के पालन और व्यक्तिगत स्वार्थ से ऊपर उठने का पाठ पढ़ाते हैं। हार स्वीकार करना और फिर प्रयास करना भी खेलों की महत्त्वपूर्ण सीख है।

फिर भी खेलों के विकास में कई बाधाएँ हैं। अनेक विद्यालयों में पर्याप्त मैदान, उपकरण और प्रशिक्षक नहीं हैं। ग्रामीण प्रतिभाएँ आर्थिक अभाव और मार्गदर्शन की कमी से पीछे रह जाती हैं। पढ़ाई के दबाव के कारण खेलों को समय की बर्बादी समझना भी उचित नहीं है। लड़कियों और दिव्यांग खिलाड़ियों को समान अवसर देना आवश्यक है।

इन समस्याओं के समाधान के लिए विद्यालयों में नियमित खेल-अवधि होनी चाहिए। स्थानीय मैदान सुरक्षित रखे जाएँ, योग्य प्रशिक्षक उपलब्ध हों और प्रतिभावान खिलाड़ियों को पोषण तथा प्रशिक्षण में सहायता मिले। लोकप्रिय खेलों के साथ देशी और कम चर्चित खेलों को भी प्रोत्साहन दिया जाए।

भारतीय खेल हमारी सांस्कृतिक धरोहर और भविष्य की संभावनाएँ हैं। परिवार, विद्यालय और सरकार मिलकर खेल-संस्कृति को बढ़ाएँ तो स्वस्थ नागरिक और सक्षम खिलाड़ी दोनों तैयार होंगे। खेलों का वास्तविक सम्मान तभी होगा जब हर बच्चे को खेलने का अवसर मिलेगा।

चरण 3: निष्कर्ष भारतीय खेलों के विकास के लिए परंपरागत खेलों का संरक्षण, सभी को समान अवसर और प्रशिक्षण की उचित सुविधाएँ आवश्यक हैं। खेल स्वास्थ्य तथा चरित्र दोनों का निर्माण करते हैं।

त्वरित सुझाव: इस विषय में केवल क्रिकेट पर न रुकें; कबड्डी और खो-खो के उदाहरण देकर सुविधाओं तथा समान अवसर के ठोस उपाय भी लिखें।

4. मोहल्ले में नए आए कुछ नवयुवकों की गतिविधियों पर आपको संदेह है और आपने ऐसी गतिविधियों को कैमरे में क़ैद भी किया है । संदेह का आधार बताते हुए पुलिस आयुक्त को उपयुक्त क़दम उठाने के लिए पत्र लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पुलिस आयुक्त को लिखा जाने वाला पत्र औपचारिक होता है। इसमें प्रेषक का पता, दिनांक, प्राप्तकर्ता, विषय, संबोधन, मुख्य कथ्य और हस्ताक्षर क्रम से आते हैं।
- संदेह और प्रमाणित अपराध में अंतर रखना आवश्यक है। देखी गई गतिविधियों का समय, स्थान और स्वरूप बताते हुए निष्पक्ष जाँच तथा सुरक्षा की माँग करनी चाहिए। कैमरे में सुरक्षित सामग्री जाँच अधिकारी को देने की बात स्पष्ट करें।

चरण 1: पत्र की सामग्री की योजना बनाना पत्र में पहले अपना परिचय और मोहल्ले का स्थान दें। फिर संदेह के ठोस आधार लिखें, जैसे देर रात बार-बार संदिग्ध ढंग से वस्तुओं का आदान-प्रदान और बंद घरों के आसपास असामान्य आवाजाही। केवल नए आने या किसी की वेशभूषा को संदेह का आधार न बनाएँ। अंत में कैमरे की रिकॉर्डिंग उपलब्ध कराने की सूचना देकर गश्त तथा गोपनीय जाँच का अनुरोध करें। भाषा विनम्र, तथ्यप्रधान और संयमित रहे।

चरण 2: पूर्ण आदर्श पत्र 24, विकास नगर
नई दिल्ली
15 मार्च, 2015
सेवा में,
पुलिस आयुक्त महोदय
दिल्ली पुलिस
नई दिल्ली

विषय: मोहल्ले में संदिग्ध गतिविधियों की जाँच और सुरक्षा व्यवस्था हेतु अनुरोध।

महोदय,

सविनय निवेदन है कि मैं विकास नगर का निवासी हूँ। हमारे मोहल्ले के मकान संख्या 18 में हाल ही में कुछ नवयुवक किराए पर रहने आए हैं। पिछले कुछ दिनों से उनकी कुछ गतिविधियाँ असामान्य दिखाई दे रही हैं, जिससे मोहल्ले के निवासियों में चिंता है।

कई रातों को लगभग ग्यारह बजे के बाद उनके घर के सामने अलग-अलग वाहन रुकते हैं और पैकेटों का आदान-प्रदान होता है। इनमें से कुछ युवकों को आसपास के बंद मकानों के दरवाजों और खिड़कियों के निकट बार-बार घूमते भी देखा गया है। इन गतिविधियों का उद्देश्य हमें ज्ञात नहीं है; इसलिए हम किसी पर अपराध का आरोप नहीं लगा रहे हैं। किंतु इनकी पुनरावृत्ति के कारण जाँच कराना आवश्यक प्रतीत होता है।

मैंने सार्वजनिक गली में दिखाई देने वाली ऐसी कुछ गतिविधियों को कैमरे में रिकॉर्ड किया है। संबंधित तारीख और समय सहित मूल रिकॉर्डिंग सुरक्षित है, जिसे मैं नियुक्त जाँच अधिकारी को उपलब्ध करा सकता हूँ।

आपसे अनुरोध है कि स्थानीय पुलिस द्वारा मामले की निष्पक्ष जाँच कराई जाए तथा क्षेत्र में रात की गश्त बढ़ाई जाए। कृपया सूचना देने वाले निवासियों की पहचान गोपनीय रखते हुए आवश्यक सुरक्षा उपाय भी किए जाएँ, ताकि अनावश्यक अफवाहें न फैलें और वास्तविक स्थिति स्पष्ट हो सके।

धन्यवाद।

भवदीय
अजय कुमार
स्थानीय निवासी

चरण 3: निष्कर्ष पत्र में संदेह के विशिष्ट आधार और रिकॉर्डिंग की उपलब्धता बताते हुए पुलिस आयुक्त से निष्पक्ष जाँच, रात्रि गश्त और निवासियों की सुरक्षा का अनुरोध किया गया है।

त्वरित सुझाव: संदेह को सिद्ध अपराध की तरह न लिखें; गतिविधि, समय और रिकॉर्डिंग का उल्लेख करके निष्पक्ष जाँच की स्पष्ट माँग करें।

अथवा

4. यातायात नियमों की अनदेखी करना कुछ युवकों का शौक बनता जा रहा है, जिससे नियम-पालन करने वाले नागरिकों को असुविधा होती है । इस मुद्दे की चर्चा करते हुए किसी प्रतिष्ठित समाचार-पत्र के संपादक को पत्र लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संपादक को पत्र लिखकर किसी सार्वजनिक समस्या की ओर समाज और प्रशासन का ध्यान आकर्षित किया जाता है। भाषा औपचारिक, तथ्यपरक और विनम्र होनी चाहिए।
- पत्र में प्रेषक का पता, दिनांक, संपादक का पद और पता, विषय, संबोधन, समस्या, सुझाव तथा नाम सहित समापन दिया जाता है।

चरण 1: प्रारूप तथा विषयवस्तु की योजना पत्र का विषय युवकों द्वारा यातायात नियमों की अनदेखी है। पहले समस्या के रूप बताएँ, फिर नियम मानने वाले नागरिकों पर उसके प्रभाव स्पष्ट करें। अंत में नियमित जाँच, जागरूकता और निष्पक्ष कार्रवाई के व्यावहारिक सुझाव दें। किसी पूरे आयु-वर्ग को दोषी ठहराने के बजाय कुछ युवकों के अनुचित व्यवहार की चर्चा करें।

चरण 2: संपादक को पूरा पत्र 24, आदर्श नगर
नई दिल्ली–110033
15 मार्च, 2015
सेवा में,
संपादक महोदय,
दैनिक जागरण, नई दिल्ली।
विषय: युवकों द्वारा यातायात नियमों की अनदेखी की समस्या।
महोदय,
आपके लोकप्रिय समाचार-पत्र के माध्यम से मैं यातायात पुलिस और नागरिकों का ध्यान कुछ युवकों की बढ़ती यातायात-अनुशासनहीनता की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। तेज गति से वाहन चलाना, लालबत्ती पार करना, उलटी दिशा में चलना तथा बिना हेलमेट दोपहिया चलाना कुछ युवकों के लिए मनोरंजन और दिखावे का साधन बन रहा है।

उनकी ऐसी लापरवाही से नियमों का पालन करने वाले वाहनचालकों को अचानक ब्रेक लगाना पड़ता है। पैदल यात्रियों, विशेषकर बच्चों और बुजुर्गों को सड़क पार करने में कठिनाई होती है। अनावश्यक शोर, जाम और दुर्घटना की आशंका से नागरिकों का जीवन प्रभावित होता है। सड़क सबके उपयोग की जगह है; किसी का शौक दूसरों की सुरक्षा पर भारी नहीं पड़ना चाहिए।

यातायात पुलिस को व्यस्त चौराहों और शिक्षण संस्थानों के आसपास नियमित जाँच करनी चाहिए। उल्लंघन करने वालों पर नियमानुसार निष्पक्ष कार्रवाई हो। विद्यालयों और महाविद्यालयों में सड़क-सुरक्षा कार्यक्रम चलाए जाएँ। अभिभावक भी बच्चों को जिम्मेदार वाहनचालन के लिए प्रेरित करें।

आशा है कि आप इस समस्या को अपने पत्र में स्थान देकर जनजागरण में सहयोग करेंगे।
भवदीय,
अमित कुमार

चरण 3: निष्कर्ष संपादक को लिखे गए इस पत्र में यातायात नियमों के उल्लंघन, नागरिकों की असुविधा और सुरक्षा के उपायों को औपचारिक ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

त्वरित सुझाव: संपादक को पत्र में समस्या के बाद नागरिकों पर प्रभाव और ठोस सुझाव अवश्य लिखें; अंत में प्रकाशन का विनम्र अनुरोध करें।

5(क). संचार प्रक्रिया में फीडबैक किसे कहते हैं और इसका क्या महत्त्व है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संचार में संदेश प्रेषक से प्राप्तकर्ता तक पहुँचता है और प्राप्तकर्ता की प्रतिक्रिया फिर प्रेषक तक लौटती है।
- प्रतिक्रिया से संदेश की समझ तथा संचार की प्रभावशीलता का पता चलता है।

चरण 1: फीडबैक की पहचान संदेश प्राप्त करने के बाद प्राप्तकर्ता जो उत्तर या प्रतिक्रिया प्रेषक को देता है, उसे फीडबैक या प्रतिपुष्टि कहते हैं। यह प्रतिक्रिया मौखिक, लिखित या संकेतों के रूप में हो सकती है।

चरण 2: महत्त्व स्पष्ट करना फीडबैक से प्रेषक जानता है कि उसका संदेश प्राप्त हुआ या नहीं और उसे सही अर्थ में समझा गया या नहीं। प्रतिक्रिया के आधार पर वह अस्पष्टता दूर कर सकता है। इस प्रकार संचार दोतरफा और अधिक प्रभावी बनता है।

चरण 3: निष्कर्ष प्राप्तकर्ता की प्रेषक को मिलने वाली प्रतिक्रिया फीडबैक है; यह संदेश की समझ की पुष्टि करती है और संचार को प्रभावी बनाती है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले प्राप्तकर्ता की प्रतिक्रिया बताएँ, फिर संदेश की सही समझ की पुष्टि को उसका महत्त्व लिखें।

5(ख). समाचार शब्द को परिभाषित कीजिए । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- समाचार का आधार नवीनता, तथ्य और व्यापक जनसमुदाय की रुचि या महत्त्व है।
- किसी घटना के विवरण में विश्वसनीयता और तथ्यपरकता अनिवार्य हैं।

चरण 1: समाचार के आवश्यक गुण समाचार किसी नवीन घटना, विचार या समस्या की ऐसी तथ्यपूर्ण जानकारी है जिसका लोगों के लिए महत्त्व हो या जिसमें उनकी रुचि हो। केवल नया होना पर्याप्त नहीं; सूचना का सामाजिक सरोकार भी होना चाहिए।

चरण 2: सूचना की प्रस्तुति स्पष्ट करना जब ऐसी जानकारी को संचार के किसी माध्यम से लोगों तक पहुँचाया जाता है, तो वह समाचार के रूप में प्रस्तुत होती है। आधारहीन अफवाह या केवल निजी राय को सत्यापित घटना का विवरण नहीं माना जा सकता।

चरण 3: निष्कर्ष किसी नवीन, महत्त्वपूर्ण और जनरुचि से जुड़ी घटना या विचार की तथ्यपूर्ण जानकारी को समाचार कहते हैं।

त्वरित सुझाव: समाचार की परिभाषा में नवीनता, तथ्यपरकता और जनरुचि के तीन आधारों को एक वाक्य में जोड़ें।

5(ग). इंटरनेट की लोकप्रियता के दो कारणों का उल्लेख कीजिए । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- इंटरनेट सूचना तक तीव्र पहुँच और अनेक माध्यमों की सुविधाएँ एक साथ उपलब्ध कराता है।
- इसकी अंतःक्रियात्मकता उपयोगकर्ता को सूचना ग्रहण करने के साथ प्रतिक्रिया देने का अवसर भी देती है।

चरण 1: पहला कारण: त्वरित सूचना इंटरनेट पर देश-विदेश की विविध सूचनाएँ बहुत जल्दी मिल जाती हैं। समाचार और अन्य सामग्री को लगातार अद्यतन किया जा सकता है। उपयोगकर्ता अपनी आवश्यकता की जानकारी सुविधानुसार खोज और पढ़ सकता है।

चरण 2: दूसरा कारण: बहुमाध्यमी और संवादात्मक स्वरूप इंटरनेट पर पाठ, चित्र, ध्वनि और वीडियो एक साथ उपलब्ध होते हैं। उपयोगकर्ता सामग्री पर तुरंत प्रतिक्रिया दे सकता है और दूसरों से संवाद कर सकता है। यह भागीदारी और विविध प्रस्तुति इसे आकर्षक बनाती है।

चरण 3: निष्कर्ष इंटरनेट की लोकप्रियता के दो कारण हैं: सूचनाओं की त्वरित तथा सुविधाजनक उपलब्धता और उसका बहुमाध्यमी, अंत:क्रियात्मक स्वरूप।

त्वरित सुझाव: दो कारण अलग-अलग लिखें: पहले सूचना की गति, फिर पाठ-चित्र-वीडियो के साथ प्रतिक्रिया की सुविधा बताएँ।

5(घ). किसी समाचार की प्रस्तुति में जनरुचि का क्या महत्त्व है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- जनरुचि का अर्थ लोगों की अभिरुचियों, आवश्यकताओं और सरोकारों से है।
- समाचार का चयन और प्रस्तुति पाठकों तथा दर्शकों की उपयोगिता को ध्यान में रखकर की जाती है।

चरण 1: पाठक से समाचार का संबंध जनरुचि समाचार को लोगों के जीवन से जोड़ती है। शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य और स्थानीय सुविधाओं जैसी सूचनाओं में लोगों की रुचि होती है क्योंकि उनका दैनिक जीवन उनसे प्रभावित होता है।

चरण 2: प्रस्तुति पर प्रभाव जनरुचि को ध्यान में रखने से समाचार के उपयोगी पक्ष को प्रमुखता दी जाती है और प्रस्तुति रोचक तथा प्रासंगिक बनती है। इससे लोग समाचार को पढ़ते और समझते हैं; फिर भी तथ्यों की शुद्धता बनाए रखना आवश्यक है।

चरण 3: निष्कर्ष जनरुचि समाचार की प्रस्तुति को प्रासंगिक, उपयोगी और आकर्षक बनाती है तथा अधिक लोगों को उससे जोड़ती है।

त्वरित सुझाव: जनरुचि का महत्त्व बताते समय लोगों के सरोकार और समाचार की उपयोगिता का संबंध स्पष्ट करें।

5(ङ). संपादन में वस्तुपरकता से क्या तात्पर्य है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- वस्तुपरकता का आधार सत्यापित तथ्य हैं, संपादक की निजी पसंद या पूर्वाग्रह नहीं।
- निष्पक्ष संपादन में समाचार की तथ्यात्मक शुद्धता और संतुलित प्रस्तुति सुरक्षित रहती है।

चरण 1: वस्तुपरकता का अर्थ संपादन में वस्तुपरकता का तात्पर्य समाचार को तथ्यों के आधार पर प्रस्तुत करना है। संपादक अपनी निजी भावनाओं, विचारों या पक्षपात को घटना के तथ्यात्मक विवरण पर हावी नहीं होने देता।

चरण 2: संपादन में उसका पालन समाचार के तथ्यों की जाँच की जाती है और संबंधित पक्षों के कथनों को उचित संदर्भ में रखा जाता है। अपुष्ट आरोप या निजी राय को प्रमाणित तथ्य के रूप में प्रस्तुत नहीं किया जाता। इससे समाचार की विश्वसनीयता बनी रहती है।

चरण 3: निष्कर्ष संपादन में वस्तुपरकता का अर्थ निजी पूर्वाग्रह से मुक्त रहकर सत्यापित तथ्यों की निष्पक्ष और संतुलित प्रस्तुति करना है।

त्वरित सुझाव: वस्तुपरकता समझाने के लिए तथ्य को आधार और निजी पूर्वाग्रह से दूरी को आवश्यक शर्त बताएँ।

6. 'आँखों देखी आपदा' पर एक आलेख लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आलेख में विषय से जुड़ी घटना, उसका सामाजिक प्रभाव और लेखक का विचार क्रमबद्ध रूप से प्रस्तुत किया जाता है। शीर्षक, लेखक का नाम, प्रभावी आरंभ, विवरण और सार्थक समापन उसके प्रमुख अंग हैं।
- आँखों देखी घटना के वर्णन में दृश्य, ध्वनि और लोगों की प्रतिक्रियाएँ उपयोगी होती हैं। संवेदना के साथ राहत, सहयोग और आपदा की तैयारी का विवेचन आलेख को उद्देश्यपूर्ण बनाता है।

चरण 1: प्रारूप और विषयवस्तु की योजना शीर्षक के नीचे लेखक का नाम दें। आरंभ में अचानक आई बाढ़ का दृश्य रखें, फिर प्रभावित परिवारों और बचाव कार्य का प्रत्यक्ष विवरण दें। अंत में आपदा से मिली सीख तथा सुरक्षित निर्माण, चेतावनी और सामुदायिक तैयारी की आवश्यकता स्पष्ट करें। भाषा सहज, संवेदनशील और तथ्यपरक रखें।

चरण 2: पूरा नमूना आलेख **आँखों देखी आपदा**

लेखक: एक विद्यार्थी

उस सुबह वर्षा थमने का नाम नहीं ले रही थी। मैं अपने घर की खिड़की से सड़क पर तेजी से बढ़ता पानी देख रहा था। कुछ ही देर में नाला उफन पड़ा और निचली बस्ती की गलियाँ जलमग्न हो गईं। लोग बच्चों को गोद में उठाए ऊँची जगहों की ओर भाग रहे थे। कल तक चहल-पहल से भरा बाजार भय और बेचैनी में डूब गया था।

पड़ोस के एक बुजुर्ग अपने घर में फँस गए थे। स्थानीय युवकों ने रस्सी का सहारा लेकर उन्हें सुरक्षित निकाला। बचाव दल नाव लेकर पहुँचा तो सबने मिलकर महिलाओं, बच्चों और बीमार लोगों को पहले बाहर निकाला। विद्यालय में अस्थायी राहत केंद्र बनाया गया। वहाँ स्वयंसेवक भोजन, पानी और सूखे कपड़े बाँट रहे थे। कई परिवारों की आँखों में अपने उजड़े घरों की चिंता थी, फिर भी एक-दूसरे की सहायता से उन्हें हौसला मिल रहा था।

इस आपदा ने मुझे समझाया कि संकट में मनुष्यता सबसे बड़ा सहारा है। पर केवल संकट आने पर सक्रिय होना पर्याप्त नहीं। नालों की नियमित सफाई, जलनिकासी की उचित व्यवस्था, बाढ़-क्षेत्रों में निर्माण पर नियंत्रण और समय पर चेतावनी जरूरी हैं। विद्यालयों तथा मोहल्लों में बचाव का प्रशिक्षण भी मिलना चाहिए। प्रकृति के प्रति जिम्मेदार व्यवहार और संगठित तैयारी से ही ऐसी तबाही का प्रभाव कम किया जा सकता है।

चरण 3: निष्कर्ष आलेख प्रत्यक्ष अनुभव के माध्यम से आपदा की भयावहता, सामूहिक सहयोग और पूर्वतैयारी की आवश्यकता स्पष्ट करता है।

त्वरित सुझाव: पहले आपदा का एक स्पष्ट दृश्य चुनें, फिर बचाव का क्रम लिखें और अंत में उसी घटना से निकली व्यावहारिक सीख दें।

अथवा

6. 'शहरों की मॉल संस्कृति' पर एक आलेख लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आलेख किसी सामाजिक विषय के विभिन्न पक्षों का तर्कपूर्ण विवेचन करता है। आकर्षक शीर्षक, लेखक का नाम, स्पष्ट प्रस्तावना, उदाहरणों सहित विश्लेषण और निष्कर्ष इसका आवश्यक ढाँचा हैं।
- मॉल संस्कृति का विश्लेषण करते समय सुविधा, मनोरंजन और रोजगार के साथ अनावश्यक खरीद, सामाजिक विषमता तथा स्थानीय बाजारों पर प्रभाव पर भी विचार करना चाहिए। संतुलित दृष्टि आलेख को विश्वसनीय बनाती है।

चरण 1: प्रारूप और विचारों का क्रम शीर्षक और लेखक के नाम के बाद मॉल के बढ़ते आकर्षण से विषय आरंभ करें। अगले अनुच्छेदों में सुविधाएँ तथा सीमाएँ उदाहरण सहित लिखें। निष्कर्ष में विवेकपूर्ण खरीद और स्थानीय व्यापार के प्रति जिम्मेदारी का सुझाव दें। केवल प्रशंसा या निंदा करने के स्थान पर दोनों पक्षों की पड़ताल करें।

चरण 2: पूरा नमूना आलेख **शहरों की मॉल संस्कृति**

लेखक: एक विद्यार्थी

चमकती रोशनियाँ, आकर्षक सजावट और एक ही परिसर में अनेक सुविधाएँ—आज महानगरों में मॉल आधुनिक जीवन के परिचित केंद्र बन गए हैं। यहाँ लोग केवल सामान खरीदने नहीं, परिवार और मित्रों के साथ समय बिताने भी आते हैं। वातानुकूलित वातावरण, सिनेमा, भोजनालय और तरह-तरह की दुकानें इन्हें विशेष आकर्षण देती हैं।

मॉल संस्कृति के कुछ उपयोगी पक्ष अवश्य हैं। एक स्थान पर अनेक वस्तुओं की उपलब्धता से समय बच सकता है। ग्राहकों को विभिन्न उत्पादों की तुलना करने का अवसर मिलता है। सुरक्षा, स्वच्छता और व्यवस्थित पार्किंग जैसी सुविधाएँ भी कई लोगों को पसंद आती हैं। इन केंद्रों से बिक्री, रखरखाव तथा अन्य सेवाओं में रोजगार के अवसर बनते हैं।

फिर भी चमक-दमक के पीछे कुछ चिंताएँ छिपी हैं। छूट और विज्ञापन ग्राहक को जरूरत से अधिक खरीदने के लिए उकसाते हैं। महँगे ब्रांड सामाजिक प्रतिष्ठा के प्रतीक बनते हैं और साधारण दुकानों या स्थानीय कारीगरों की वस्तुएँ उपेक्षित होने लगती हैं। सप्ताहांत में बढ़ता यातायात और अत्यधिक बिजली की खपत भी विचारणीय हैं। खरीदारी को ही मनोरंजन का मुख्य साधन मान लेना हमारी सांस्कृतिक गतिविधियों को सीमित करता है।

आवश्यकता मॉल से बचने की नहीं, विवेकपूर्ण उपभोग की है। बजट और जरूरत देखकर खरीदें, स्थानीय बाजारों को भी महत्व दें और विश्राम के लिए पुस्तकालय, पार्क तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों को अपनाएँ। सुविधा तभी सार्थक है जब वह दिखावे के बजाय संतुलित जीवन को बढ़ावा दे।

चरण 3: निष्कर्ष मॉल संस्कृति सुविधा और रोजगार देती है, किंतु उसका लाभ तभी सार्थक है जब उपभोग संयमित हो और स्थानीय बाजारों तथा सार्वजनिक जीवन का भी सम्मान बना रहे।

त्वरित सुझाव: मॉल की दो सुविधाओं के साथ दो सामाजिक प्रभाव जोड़ें और निष्कर्ष में जरूरत, बजट तथा स्थानीय खरीद का स्पष्ट सुझाव दें।

7. 'विलुप्त होती गौरैया' विषय पर एक फ़ीचर का आलेख लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फ़ीचर किसी विषय को संवेदनशील, रोचक और तथ्यसंगत ढंग से प्रस्तुत करता है। इसमें आकर्षक शीर्षक, दृश्यात्मक आरंभ, विषय का विस्तार और प्रभावी अंत होता है।
- इस विषय में गौरैया के घटते दिखने का अनुभव, उसके आवास और भोजन की कठिनाइयाँ तथा संरक्षण के व्यावहारिक उपाय केंद्र में रहेंगे।

चरण 1: प्रारूप और विषयवस्तु की योजना शीर्षक पाठक को परिचित चहचहाहट की याद दिलाए। लेखक की पंक्ति के बाद किसी आँगन या खिड़की का दृश्य देकर विषय खोलें। आगे बदलते मकानों, घटती हरियाली और कीटनाशकों से भोजन में आने वाली कमी की चर्चा करें। अंत में पानी, दाना, सुरक्षित घोंसले और स्थानीय पौधों के माध्यम से सहभागिता की अपील रखें। बिना प्रमाण के आँकड़े या मनगढ़ंत शोध न जोड़ें।

चरण 2: पूरा नमूना फ़ीचर कहाँ गई आँगन की चहचहाहट?

लेखक : अंशु

सुबह खिड़की खुली, धूप भीतर आई, पर वह नन्ही चहचहाहट सुनाई नहीं दी। कभी घर के रोशनदान में तिनके जमा करती गौरैया हमारे दिन का सहज हिस्सा थी। आज कई बस्तियों में उसे देखने के लिए आँखें खोजती रह जाती हैं। क्या हमारे घरों से उसका रिश्ता टूट रहा है?

बदलते शहरों में पुराने मकानों के रोशनदान और छज्जों की सुरक्षित जगहें कम हो रही हैं। चिकनी दीवारों और बंद खिड़कियों वाले घरों में घोंसले के लिए कोना मिलना कठिन है। खाली जमीन पर भवन खड़े हो रहे हैं और आसपास की झाड़ियाँ हट रही हैं। कीटनाशकों का अंधाधुंध प्रयोग उन छोटे कीटों को भी घटाता है जो गौरैया के बच्चों का भोजन बनते हैं। दाने और पानी की सुलभ जगहों का अभाव उसकी मुश्किल बढ़ाता है।

गौरैया का गायब होना केवल एक पक्षी से बिछुड़ना नहीं है। यह हमारे आसपास के बदलते पर्यावरण और प्रकृति से घटते संपर्क का संकेत

भी है। जिस आँगन में बच्चे उसके फुदकने से खुश होते थे, वहाँ अब सन्नाटा क्यों हो?

उसे लौटने का निमंत्रण देना कठिन नहीं। बालकनी या आँगन में साफ पानी का उथला पात्र रखें और उसे नियमित साफ करें। सुरक्षित स्थान पर थोड़ा दाना रखें। स्थानीय पौधे लगाएँ, अनावश्यक कीटनाशकों से बचें और उपयुक्त जगह पर घोंसला बनाने की सुरक्षित सुविधा दें। पक्षियों को बिल्ली और अन्य खतरों से बचाने का ध्यान भी रखें।

घर का अर्थ केवल हमारा आश्रय नहीं होना चाहिए। उसमें उस नन्ही पड़ोसिन के लिए भी थोड़ी जगह बची रहे, जिसकी चहचहाहट सुबह को सचमुच सुबह बनाती है।

चरण 3: निष्कर्ष इस फ़ीचर में गौरैया की अनुपस्थिति से आरंभ करके उसके संकट और संरक्षण के उपायों को मानवीय संवेदना के साथ प्रस्तुत किया गया है।

त्वरित सुझाव: गौरैया पर फ़ीचर लिखते समय चहचहाहट का दृश्य, संकट के कारण और घर में अपनाए जा सकने वाले उपाय अवश्य जोड़ें।

अथवा

7. 'काम पर जाते बच्चे' विषय पर एक फ़ीचर का आलेख लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फ़ीचर में सामाजिक समस्या को मानवीय अनुभव, दृश्य और विचार के सहारे प्रस्तुत किया जाता है। शीर्षक, रोचक आरंभ, क्रमबद्ध विस्तार और अर्थपूर्ण समापन उसका आधार हैं।
- बालश्रम पर लिखते समय बच्चे की गरिमा, शिक्षा का अधिकार, गरीबी की विवशता और समाज की जिम्मेदारी को संतुलित ढंग से उभारना चाहिए।

चरण 1: प्रारूप और विषयवस्तु की योजना शीर्षक में बचपन और काम के विरोध को उभारें। लेखक की पंक्ति दें और स्कूल जाते बच्चों के बीच काम पर जाते बच्चे का दृश्य प्रस्तुत करें। फिर आर्थिक कठिनाइयों, पढ़ाई छूटने और असुरक्षित काम के प्रभावों पर चर्चा करें। परिवार को दोषी ठहराने के स्थान पर शोषण रोकने, शिक्षा सुलभ बनाने और परिवार की सहायता जैसे उपाय रखें। किसी काल्पनिक बच्चे की बात को वास्तविक सर्वेक्षण या साक्षात्कार न बताएँ।

चरण 2: पूरा नमूना फ़ीचर बस्ते की जगह बोझ

लेखक : अंशु

सुबह का समय है। सड़क पर स्कूल की बस रुकी है। बच्चे बस्ते सँभालते हुए उसमें चढ़ रहे हैं। पास की दुकान पर एक बच्चा झाड़ू लगा रहा है। उसकी नजर पल भर के लिए बस पर ठहरती है और फिर वह काम में लग जाता है। एक ही सुबह दो बच्चों के लिए इतनी अलग क्यों है?

चाय की दुकानों, ढाबों, छोटे कारखानों और घरों में काम करते बच्चे हमारे आसपास दिखाई देते हैं। जिन हाथों में किताब और खिलौने होने चाहिए, वे गंदे बर्तन और भारी सामान सँभालते हैं। लंबा काम, थकान और कभी दुर्व्यवहार उनके शरीर ही नहीं, आत्मविश्वास को भी चोट पहुँचाते हैं। पढ़ाई छूटने पर भविष्य के बेहतर अवसर और दूर हो जाते हैं।

इस स्थिति के पीछे परिवार की आर्थिक कठिनाइयाँ, असुरक्षित आजीविका और शिक्षा तक पहुँच की बाधाएँ हो सकती हैं। सस्ते श्रम की माँग और हमारी उदासीनता समस्या को बढ़ाती हैं। किसी बच्चे से काम कराकर उसे भोजन देना उसके पूरे बचपन की जरूरतें पूरी करना नहीं है। उसे सुरक्षा, सीखने का अवसर और खेलने का समय भी चाहिए।

समाधान केवल दया के कुछ शब्द नहीं हैं। जरूरतमंद परिवारों को सहायता और सम्मानजनक आजीविका से जोड़ना होगा। विद्यालयों को बच्चों के लिए सुलभ और सहयोगी बनाना होगा। काम से मुक्त हुए बच्चे को पढ़ाई में लौटने तथा छूटी हुई पढ़ाई पूरी करने में मदद चाहिए। नागरिकों को बालश्रम को सामान्य मानना छोड़कर उपयुक्त सहायता व्यवस्था तक सूचना पहुँचानी चाहिए।

अगली बार दुकान पर काम करते बच्चे को देखें तो केवल अपना सामान लेकर आगे न बढ़ जाएँ। उसके हिस्से की सुबह के बारे में भी सोचें। समाज की प्रगति तभी सार्थक होगी, जब हर बच्चा काम की विवशता से मुक्त होकर स्कूल, खेल और सपनों की ओर जा सके।

चरण 3: निष्कर्ष यह फ़ीचर काम पर जाते बच्चों की पीड़ा को दृश्यात्मक ढंग से सामने रखकर शिक्षा, सुरक्षा और सामाजिक उत्तरदायित्व की आवश्यकता रेखांकित करता है।

त्वरित सुझाव: बालश्रम के फ़ीचर में मार्मिक दृश्य के बाद कारण और ठोस समाधान जोड़ें; केवल भावुक अपील पर लेख समाप्त न करें।

8. मैं निज रोदन में राग लिए फिरता हूँ,
शीतल वाणी में आग लिए फिरता हूँ,
हों जिस पर भूपों के प्रासाद निछावर,
मैं वह खंडहर का भाग लिए फिरता हूँ । [8 अंक]

8(क). शीतल वाणी में आग का क्या तात्पर्य है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्य-पंक्ति का आशय समझने के लिए प्रतीकात्मक शब्दों को साथ पढ़ना आवश्यक है। यहाँ शीतलता और आग का विरोध कवि के व्यक्तित्व की दो विशेषताएँ उजागर करता है।
- हरिवंश राय बच्चन की इन पंक्तियों में वाणी की कोमलता के भीतर हृदय की तीव्र अनुभूति और विद्रोही चेतना व्यक्त हुई है।

चरण 1: शीतल वाणी का अर्थ शीतल वाणी से तात्पर्य कवि की मधुर, शांत और कोमल अभिव्यक्ति से है। उसके बोलने या कविता कहने का ढंग कठोर और कटु नहीं है। इस मधुरता के कारण उसकी बात पाठक के हृदय तक पहुँचती है।

चरण 2: आग का प्रतीकात्मक आशय आग कवि के भीतर की तीव्र वेदना, भावों के ताप तथा अन्याय और रूढ़ियों के विरुद्ध विद्रोह का प्रतीक है। बाहर से शांत लगने वाली वाणी भीतर के प्रखर भावों को छिपाए हुए है। इसलिए शीतल वाणी को भावहीनता समझना उचित नहीं है; उसमें संवेदना और परिवर्तन की बेचैनी दोनों मौजूद हैं।

चरण 3: निष्कर्ष शीतल वाणी में आग का तात्पर्य है कि कवि की मधुर और शांत अभिव्यक्ति में गहरी वेदना तथा अन्याय के विरुद्ध प्रखर विद्रोह निहित है।

त्वरित सुझाव: शीतल वाणी का बाहरी स्वर और आग का भीतरी भाव अलग स्पष्ट करें, फिर दोनों के विरोध में छिपा आशय जोड़ें।

8(ख). कवि ने खंडहर का भाग किसे कहा है और क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रतीक का अर्थ प्रसंग में खुलता है। यहाँ राजमहल और खंडहर के विरोध से बाहरी वैभव तथा भीतरी अनुभव के मूल्य का अंतर सामने आता है।
- खंडहर कवि के दुखों से टूटे, किंतु प्रेम और संवेदना से समृद्ध हृदय तथा जीवन का प्रतीक है।

चरण 1: खंडहर के भाग की पहचान कवि ने अपने दुखों और विरह से टूटे हुए हृदय तथा निजी जीवन को खंडहर का भाग कहा है। जैसे खंडहर किसी बीते हुए जीवन के अवशेष सँजोए रखता है, वैसे ही कवि का हृदय प्रेम की स्मृतियों और पीड़ा को सँभाले हुए है।

चरण 2: इस नामकरण का कारण कवि का जीवन बाहर से दुखी और टूटा हुआ दिखाई देता है, इसलिए वह उसे खंडहर की उपमा देता है। फिर भी उसमें प्रेम, संवेदना और अनुभूतियों की ऐसी संपदा है जिसे वह राजाओं के भव्य महलों से अधिक मूल्यवान मानता है। इसीलिए अगली छवि में उस पर राजमहल निछावर होने की बात कही गई है। यह अपने अनुभूतिपूर्ण जीवन के प्रति कवि के आत्मगौरव को भी व्यक्त करता है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि ने अपने दुख और प्रेम की स्मृतियों से भरे भग्न हृदय को खंडहर का भाग कहा है, क्योंकि उसका जीवन पीड़ा से टूटा होकर भी अनमोल भाव-संपदा से समृद्ध है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में खंडहर को केवल इमारत न बताएँ; उसे कवि के पीड़ित हृदय और उसकी अमूल्य भाव-संपदा से जोड़ें।

8(ग). राजमहल न्यौछावर होने से क्या आशय है और वे किस पर न्यौछावर होते हैं ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश के शब्दों और उनके प्रतीकार्थ के आधार पर उत्तर देना आवश्यक है।
- भाव स्पष्ट करते समय प्रस्तुत पंक्तियों से संबंध बनाए रखें और प्रश्न के दोनों पक्षों का उत्तर दें।

चरण 1: प्रासाद और खंडहर का प्रतीकार्थ राजमहल न्यौछावर होने का अर्थ है राजसी वैभव का भी तुच्छ या समर्पण योग्य हो जाना। यहाँ 'भूपों के प्रासाद' बाहरी धन, सत्ता और ऐश्वर्य के प्रतीक हैं। कवि उनके सामने मनुष्य के अंतर की संपदा का मूल्य स्थापित करता है।

चरण 2: कवि के हृदय के खंडहर का मूल्य राजमहल कवि के उस हृदय रूपी खंडहर पर न्यौछावर होते हैं जिसमें प्रेम, स्मृतियाँ, वेदना और संवेदना संचित हैं। खंडहर बाहरी दृष्टि से उजड़ा है, किंतु उसकी भावनात्मक समृद्धि ऐसी है कि राजाओं के महलों का वैभव भी उस पर अर्पित किया जा सकता है।

चरण 3: निष्कर्ष राजमहलों का न्यौछावर होना बाहरी ऐश्वर्य से अधिक कवि के संवेदनशील, भग्न हृदय का मूल्य होना है। वे उसी हृदय रूपी खंडहर पर न्यौछावर होते हैं।

त्वरित सुझाव: प्रासाद को बाहरी वैभव और खंडहर को कवि के संवेदनशील हृदय से जोड़कर दोनों प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

8(घ). 'मेरा जीवन विरुद्धों का सामंजस्य है' – यह बात कवि ने कैसे समझाई है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश के शब्दों और उनके प्रतीकार्थ के आधार पर उत्तर देना आवश्यक है।
- भाव स्पष्ट करते समय प्रस्तुत पंक्तियों से संबंध बनाए रखें और प्रश्न के दोनों पक्षों का उत्तर दें।

चरण 1: रोदन के भीतर राग कवि कहता है कि वह अपने रोदन में भी राग लेकर चलता है। रोदन दुख और पीड़ा की अभिव्यक्ति है, जबकि राग संगीत, मधुरता और आनंद का संकेत है। इस प्रकार उसका जीवन केवल दुखमय नहीं है; दुख के भीतर भी प्रेम और जीवन का मधुर स्वर उपस्थित है।

चरण 2: शीतल वाणी में आग और खंडहर का वैभव कवि की वाणी शीतल है, फिर भी उसमें आग है। उसकी अभिव्यक्ति शांत और मधुर होते हुए भी भीतरी दाह और तीव्र भावावेग से भरी है। इसी तरह उसका हृदय खंडहर जैसा भग्न है, पर इतना मूल्यवान है कि राजाओं के प्रासाद भी उस पर न्यौछावर हों। ये विरोधी स्थितियाँ उसके भीतर साथ रहती हैं।

चरण 3: निष्कर्ष रोदन में राग, शीतल वाणी में आग तथा खंडहर में राजमहलों से बढ़कर मूल्य दिखाकर कवि ने अपने जीवन को विरुद्धों का सामंजस्य बताया है।

त्वरित सुझाव: रोदन–राग और शीतलता–आग की जोड़ियों को केवल अलंकार न कहें; उनके विपरीत भाव भी स्पष्ट करें।

अथवा

8. अंगना-अंग से लिपटे भी
आतंक अंक पर काँप रहे हैं
धनी, वज्र-गर्जन से बादल ?
त्रस्त नयन मुख ढाँप रहे हैं ।
जीर्ण बाहु, है शीर्ण शरीर,
तुझे बुलाता कृषक अधीर
ऐ विप्लव के वीर! [8 अंक]

8(क). कौन लोग विलासिता में डूबे हुए हैं ? वे क्यों भयभीत हैं ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश के शब्दों और उनके प्रतीकार्थ के आधार पर उत्तर देना आवश्यक है।
- भाव स्पष्ट करते समय प्रस्तुत पंक्तियों से संबंध बनाए रखें और प्रश्न के दोनों पक्षों का उत्तर दें।

चरण 1: विलासिता में डूबे लोगों की पहचान काव्यांश में धनिक वर्ग विलासिता में डूबा हुआ है। 'अंगना-अंग से लिपटे भी' से उसकी भोगमयी जीवनचर्या का संकेत मिलता है। संपन्न लोग स्त्रियों के सान्निध्य और अपने सुख के साधनों में मग्न हैं, फिर भी वे मन से निश्चिंत नहीं हैं।

चरण 2: बादल की गर्जना से भय बादल की वज्र जैसी गर्जना उन्हें क्रांति की आहट सुनाती है। वे आशंकित हैं कि यह परिवर्तन उनके संचित वैभव और शोषण पर टिकी सुविधाओं को समाप्त कर देगा। इसलिए विलास के बीच भी वे काँप रहे हैं और डरी हुई आँखों तथा मुख को ढाँप रहे हैं। उनका भय अपने विशेषाधिकार खो देने का है।

चरण 3: निष्कर्ष विलासिता में धनिक वर्ग डूबा है। बादल की गर्जना में क्रांति का संकेत पाकर वह अपनी संपत्ति और सुख-सुविधाएँ छिन जाने की आशंका से भयभीत है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले धनिक वर्ग का नाम लिखें, फिर गर्जना को क्रांति और भय को वैभव खोने की आशंका से जोड़ें।

8(ख). 'विप्लव के वीर' किसे कहा गया है ? क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश के शब्दों और उनके प्रतीकार्थ के आधार पर उत्तर देना आवश्यक है।
- भाव स्पष्ट करते समय प्रस्तुत पंक्तियों से संबंध बनाए रखें और प्रश्न के दोनों पक्षों का उत्तर दें।

चरण 1: संबोधन की पहचान 'विप्लव के वीर' बादल को कहा गया है। किसान उसी को अधीर होकर बुलाता है। यहाँ बादल केवल वर्षा लाने वाली प्राकृतिक शक्ति नहीं है, बल्कि अन्यायपूर्ण सामाजिक व्यवस्था को बदलने वाली क्रांति का प्रतीक भी बनकर सामने आता है।

चरण 2: वीर कहे जाने का कारण बादल की प्रबल गर्जना संपन्न शोषक वर्ग को भयभीत करती है और दुर्बल किसान में नई आशा जगाती है। वह वर्षा द्वारा सूखी धरती को नया जीवन देता है। इसी प्रकार क्रांति शोषण से पीड़ित लोगों को मुक्ति और नवजीवन दे सकती है। उसके इस प्रचंड और परिवर्तनकारी रूप के कारण कवि ने उसे विप्लव का वीर कहा है।

चरण 3: निष्कर्ष बादल को 'विप्लव के वीर' कहा गया है, क्योंकि वह शोषक वर्ग को भयभीत करने और पीड़ित किसान के जीवन में परिवर्तन तथा नई आशा लाने वाली शक्ति का प्रतीक है।

त्वरित सुझाव: बादल की वर्षा और गर्जना, दोनों का संबंध बताइए: किसान को जीवन मिलता है और शोषक को परिवर्तन का भय होता है।

8(ग). किसान की दशा कैसी हो गई है ? इसका कारण क्या है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश के शब्दों और उनके प्रतीकार्थ के आधार पर उत्तर देना आवश्यक है।
- भाव स्पष्ट करते समय प्रस्तुत पंक्तियों से संबंध बनाए रखें और प्रश्न के दोनों पक्षों का उत्तर दें।

चरण 1: काव्यांश में किसान की शारीरिक दशा किसान की भुजाएँ जीर्ण और शरीर शीर्ण हो गया है। इसका अर्थ है कि वह अत्यंत दुर्बल, कृश और जर्जर हो चुका है। निरंतर श्रम करने पर भी उसे पर्याप्त भोजन और सुख नहीं मिलता। उसकी यह स्थिति 'जीर्ण बाहु' और 'शीर्ण शरीर' पदों से व्यक्त होती है।

चरण 2: दयनीय दशा का कारण उसकी दयनीय दशा का मूल कारण आर्थिक अभाव और धनिक वर्ग द्वारा किया जाने वाला शोषण है। मेहनत किसान करता है, किंतु उसकी मेहनत का पूरा लाभ उसे नहीं मिलता। फलतः उसका जीवन संकटों से घिरा रहता है। वह बादल में ऐसी परिवर्तनकारी शक्ति देखता है जो उसकी पीड़ा दूर कर सकती है।

चरण 3: निष्कर्ष किसान अत्यंत दुबला, कमजोर और जर्जर हो गया है। लगातार परिश्रम के बावजूद गरीबी, अभाव और धनिकों के शोषण ने उसकी यह दशा कर दी है।

त्वरित सुझाव: दशा के लिए जीर्ण भुजाएँ और कृश शरीर लिखें; कारण के लिए परिश्रम के बावजूद अभाव तथा शोषण स्पष्ट करें।

8(घ). बादलों को बुलाने में किसान की अधीरता का कारण स्पष्ट कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश के शब्दों और उनके प्रतीकार्थ के आधार पर उत्तर देना आवश्यक है।
- भाव स्पष्ट करते समय प्रस्तुत पंक्तियों से संबंध बनाए रखें और प्रश्न के दोनों पक्षों का उत्तर दें।

चरण 1: किसान की पीड़ा और वर्षा की आवश्यकता किसान का शरीर दुर्बल हो चुका है और जीवन अभावों से घिरा है। उसकी आजीविका खेती से जुड़ी है, इसलिए बादल की वर्षा उसके लिए फसलों, अन्न और जीवन का आधार है। वह अपने संकट के शीघ्र दूर होने की आशा में बादलों को अधीर होकर पुकारता है।

चरण 2: विप्लव की प्रतीक्षा बादल क्रांति का भी प्रतीक है। किसान चाहता है कि शोषण और विषमता पर आधारित व्यवस्था बदले तथा उसे अपने श्रम का उचित फल मिले। बादल की गर्जना धनिकों को डराती है और किसान को साहस देती है। वर्षा से प्राकृतिक नवजीवन तथा विप्लव से सामाजिक मुक्ति की आशा उसकी अधीरता का कारण है।

चरण 3: निष्कर्ष किसान बादलों को इसलिए अधीर होकर बुलाता है कि उनकी वर्षा उसकी खेती को जीवन दे और उनका क्रांतिकारी रूप शोषणपूर्ण व्यवस्था बदलकर उसके अभाव तथा दुख दूर करे।

त्वरित सुझाव: अधीरता को केवल वर्षा की चाह तक सीमित न रखें; बादल के विप्लवकारी रूप से मिलने वाली मुक्ति की आशा भी लिखें।

9. छोटा मेरा खेत चौकोना
काग़ज़ का एक पन्ना,
कोई अंधड़ कहीं से आया
क्षण का बीज वहाँ बोया गया । [6 अंक]

9(क). खेत और काग़ज़ की तुलना का आधार स्पष्ट कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश के शब्दों और उनके प्रतीकार्थ के आधार पर उत्तर देना आवश्यक है।
- भाव स्पष्ट करते समय प्रस्तुत पंक्तियों से संबंध बनाए रखें और प्रश्न के दोनों पक्षों का उत्तर दें।

चरण 1: आकार और सृजन-भूमि की समानता कवि ने काग़ज़ के पन्ने को अपना छोटा चौकोना खेत कहा है। पन्ने का चौकोना आकार इस तुलना का प्रत्यक्ष आधार है। जैसे खेत फसल उपजाने की भूमि है, वैसे ही काग़ज़ कवि के भावों और कल्पनाओं को रचना का रूप देने की भूमि है।

चरण 2: बीज से फसल और अनुभूति से कविता खेत में किसान बीज बोता है और उससे फसल उगती है। उसी प्रकार किसी क्षण की अनुभूति कवि के मन में बीज बनती है और काग़ज़ पर कविता के रूप में विकसित होती है। इस तुलना से कवि रचनात्मक श्रम को खेती की सृजन प्रक्रिया से जोड़ता है। दोनों में छोटी शुरुआत से उपयोगी और समृद्ध फल प्राप्त होता है।

चरण 3: निष्कर्ष खेत और काग़ज़ की तुलना उनके चौकोने आकार तथा सृजन का आधार होने पर की गई है। खेत में बीज से फसल और काग़ज़ पर अनुभूति के बीज से कविता जन्म लेती है।

त्वरित सुझाव: तुलना में केवल चौकोना आकार न लिखें; खेत की फसल और काग़ज़ पर रचित कविता की समानता अवश्य जोड़ें।

9(ख). अंधड़ और बीज का प्रतीकार्थ स्पष्ट कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कवि ने काव्य-रचना की प्रक्रिया को खेती के रूपक द्वारा समझाया है। काग़ज़ का पन्ना खेत है और उसमें जन्म लेने वाला भाव बीज है।
- प्रतीक का अर्थ उसके प्रसंग से खुलता है। यहाँ अंधड़ प्राकृतिक आपदा मात्र नहीं, रचनाकार के भीतर उठने वाला भावावेग है।

चरण 1: अंधड़ का प्रतीकार्थ समझिए अंधड़ कवि के मन में अचानक उठने वाले भावों, विचारों और कल्पनाओं के तीव्र आवेग का प्रतीक है। जैसे तेज़ हवा वातावरण को आंदोलित करती है, वैसे ही कोई अनुभव कवि की चेतना को झकझोर देता है। उसी प्रेरणा से रचना की शुरुआत होती है।

चरण 2: बीज को रचना से जोड़िए बीज उस क्षण-विशेष में जन्म लेने वाले मूल भाव अथवा रचना-विचार का प्रतीक है। प्रेरणा के आवेग में यह भाव कवि के हृदय और फिर काग़ज़ पर स्थान पाता है। आगे कल्पना के सहारे इसका विकास कविता के रूप में होता है। इस तरह अंधड़ प्रेरक भावावेग है, जबकि बीज उससे उपजा आरंभिक रचनात्मक भाव है।

चरण 3: निष्कर्ष अंधड़ भावों और विचारों के आकस्मिक तीव्र आवेग का तथा बीज उस आवेग से जन्मे मूल काव्य-भाव या रचना-विचार का प्रतीक है।

त्वरित सुझाव: खेती के शब्दों को काव्य-रचना से जोड़कर पढ़ें : अंधड़ को भावावेग और बीज को आरंभिक भाव के रूप में स्पष्ट करें।

9(ग). काव्यांश की भाषा की दो विशेषताएँ लिखिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भाषा की विशेषता बताते समय दिए हुए काव्यांश के शब्दों से प्रमाण देना चाहिए। यहाँ सरल खड़ी बोली और प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति प्रमुख हैं।
- खेती की परिचित क्रिया के माध्यम से कवि ने कविता के जन्म की सूक्ष्म प्रक्रिया को सहज और चित्रात्मक बना दिया है।

चरण 1: सरल और सहज भाषा पहचानिए काव्यांश की भाषा सरल, सहज तथा प्रवाहपूर्ण खड़ी बोली है। खेत, काग़ज़, पन्ना और बीज जैसे सामान्य जीवन के परिचित शब्दों का प्रयोग हुआ है। छोटे वाक्य और सहज शब्दावली होने के कारण कविता-रचना जैसी गहरी बात भी पाठक आसानी से समझ सकता है।

चरण 2: प्रतीकात्मक और बिंबात्मक प्रयोग बताइए भाषा की दूसरी विशेषता उसका प्रतीकात्मक और बिंबात्मक स्वरूप है। काग़ज़ के पन्ने को चौकोना खेत बताने से एक स्पष्ट दृश्य उभरता है। अंधड़ और बीज क्रमशः भावावेग और मूल रचना-भाव को संकेतित करते हैं। इस प्रकार खेती का रूपक अमूर्त सृजन-प्रक्रिया को मूर्त और प्रभावशाली बना देता है।

चरण 3: निष्कर्ष काव्यांश की दो प्रमुख भाषिक विशेषताएँ हैं : सरल, सहज खड़ी बोली का प्रयोग तथा खेती के बिंबों और प्रतीकों द्वारा काव्य-सृजन की प्रभावशाली अभिव्यक्ति।

त्वरित सुझाव: दो विशेषताएँ अलग-अलग लिखें और प्रत्येक के साथ इसी अंश से उदाहरण दें : सामान्य शब्दावली और खेत-बीज का प्रतीक-विधान।

अथवा

9. आँगन में ठुनक रहा है ज़िदयाया है
बालक तो हई चाँद पर ललचाया है
दर्पण उसे दे के कह रही है माँ
देख आईने में चाँद उतर आया है । [6 अंक]

9(क). काव्यांश की भाषा की लाक्षणिकता और लोकतत्त्व पर टिप्पणी कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- लाक्षणिकता में शब्दों का आशय उनके सीधे वाच्यार्थ से आगे जाकर प्रसंगानुसार ग्रहण किया जाता है। इस अंश में चाँद का उतरना ऐसा ही प्रयोग है।
- लोकतत्त्व का अर्थ लोकजीवन की बोलचाल, पारिवारिक व्यवहार, विश्वास और परिचित सांस्कृतिक प्रसंगों की उपस्थिति है।

चरण 1: चाँद के उतरने का आशय खोलिए माँ का कहना कि आईने में चाँद उतर आया है, लाक्षणिक अभिव्यक्ति है। चाँद सचमुच आकाश छोड़कर दर्पण में नहीं आता; उसका प्रतिबिंब दिखाई देता है। माँ बच्चे की कल्पना के अनुकूल इसी प्रतिबिंब को चाँद कहकर प्रस्तुत करती है। इस कथन से बालमन को समझने वाली उसकी सहज बुद्धि और वात्सल्य व्यक्त होते हैं।

चरण 2: लोकजीवन के संकेत पहचानिए आँगन में बच्चे का ठुनकना, चाँद पाने की ज़िद करना और माँ का दर्पण दिखाकर उसे बहलाना घरेलू लोकजीवन के सहज दृश्य हैं। ठुनक, ज़िदयाया और हई जैसे बोलचाल के प्रयोग भाषा को लोकभाषा का अपनापन देते हैं। बच्चे को चाँद दिखाकर मनाने का परिचित प्रसंग इस रुबाई को लोक-अनुभव से जोड़ता है।

चरण 3: निष्कर्ष चाँद के उतरने से उसके प्रतिबिंब का बोध होना लाक्षणिकता है; घरेलू दृश्य, माँ का बहलाना और लोकबोलियों के आत्मीय शब्द इस अंश के लोकतत्त्व हैं।

त्वरित सुझाव: लाक्षणिकता के लिए चाँद और प्रतिबिंब का अंतर समझाएँ; लोकतत्त्व के लिए घरेलू व्यवहार और बोलचाल के शब्द दोनों दें।

9(ख). यह किस छंद में लिखा गया है तथा उसका क्या लक्षण है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रुबाई उर्दू-फ़ारसी काव्यपरंपरा का चार पंक्तियों वाला छंद है। प्रस्तुत अंश इसी काव्यरूप की एक पूर्ण रचना है।
- रुबाई में पहली, दूसरी और चौथी पंक्ति तुकांत होती हैं; तीसरी पंक्ति सामान्यतः भिन्न तुक की होती है।

चरण 1: छंद का नाम बताइए यह काव्यांश रुबाई छंद में लिखा गया है। रुबाई में चार पंक्तियाँ होती हैं और वे मिलकर एक पूर्ण भाव प्रस्तुत करती हैं। यहाँ बच्चे के चाँद माँगने तथा माँ द्वारा दर्पण दिखाकर उसे बहलाने की पूरी घटना इन चार पंक्तियों में समा गई है। इसका रूप संक्षिप्त होते हुए भी अर्थ की दृष्टि से पूर्ण है।

चरण 2: तुक-योजना से लक्षण स्पष्ट कीजिए इसकी पहली पंक्ति के अंत में ज़िदयाया है, दूसरी के अंत में ललचाया है और चौथी के अंत में आया है आता है। इन तीनों में तुक मिलती है। तीसरी पंक्ति का अंत माँ शब्द से होता है, इसलिए उसकी तुक अलग है। इस प्रकार चार पंक्तियों तथा पहली, दूसरी और चौथी पंक्ति की समान तुक वाला विन्यास रुबाई की पहचान बनाता है।

चरण 3: निष्कर्ष यह रुबाई छंद है। इसकी चार पंक्तियाँ होती हैं; पहली, दूसरी और चौथी पंक्ति तुकांत तथा तीसरी सामान्यतः अतुकांत होती है। इसमें एक पूर्ण भाव व्यक्त होता है।

त्वरित सुझाव: रुबाई पहचानने के लिए चार पंक्तियाँ गिनें और ज़िदयाया, ललचाया, आया की तुक को तीसरी पंक्ति के माँ से मिलाकर देखें।

9(ग). काव्यांश का भाव-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भाव-सौंदर्य में कविता के भाव, पात्रों की मनःस्थिति और उनकी आत्मीयता स्पष्ट की जाती है। यहाँ वात्सल्य रस तथा बालसुलभ कल्पना प्रधान हैं।
- बालक की असंभव माँग और माँ का सहज समाधान मिलकर मातृस्नेह तथा बाल-मनोविज्ञान का सुंदर चित्र बनाते हैं।

चरण 1: बालक की सहज इच्छा समझिए आँगन में बैठा बालक चाँद को देखकर उसे पाने के लिए ललचाता है और ज़िद करते हुए ठुनकने लगता है। वह चाँद की दूरी या उसे प्राप्त करने की असंभवता नहीं समझता। उसकी भोली इच्छा और हठ में बालमन की निश्छलता, जिज्ञासा और कल्पनाशीलता का मार्मिक चित्र उभरता है।

चरण 2: माँ के स्नेहपूर्ण व्यवहार का अर्थ बताइए माँ बच्चे को डाँटती नहीं, बल्कि उसकी मनःस्थिति समझकर दर्पण में चाँद का प्रतिबिंब दिखाती है। वह कहती है कि चाँद आईने में उतर आया है। बच्चे की कल्पना के स्तर पर जाकर उसे बहलाने में माँ की व्यावहारिक सूझ, ममता और वात्सल्य प्रकट होते हैं। साधारण घरेलू घटना माँ-बच्चे के आत्मीय संबंध का सुंदर दृश्य बन जाती है।

चरण 3: निष्कर्ष अंश का भाव-सौंदर्य बालक की भोली ज़िद और माँ की स्नेहपूर्ण सूझ में है। चाँद का प्रतिबिंब दिखाने का प्रसंग बाल-मनोविज्ञान तथा मातृवात्सल्य का सहज चित्र प्रस्तुत करता है।

त्वरित सुझाव: भाव-सौंदर्य लिखते समय पहले बालक की निश्छल ज़िद और फिर माँ की ममता तथा सूझ को उसी प्रसंग के सहारे समझाएँ।

10(क). 'सहर्ष स्वीकारा है' में कवि अपने प्रेमी को क्यों भूलना चाहता है ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मुक्तिबोध की कविता में प्रिय का प्रभाव कवि के जीवन और व्यक्तित्व में गहराई से व्याप्त है। उसकी स्मृति कवि को अपने अस्तित्व से अलग नहीं लगती।
- कवि की भूलने की इच्छा प्रेम की कमी से नहीं, प्रिय की सर्वव्यापी ममता और प्रभाव से उत्पन्न मानसिक दबाव से जुड़ी है।

चरण 1: प्रिय की सर्वव्याप्त उपस्थिति समझिए कवि के जीवन की साधारण-असाधारण उपलब्धियाँ, अनुभव, सुख-दुःख और चिंतन सभी प्रिय से जुड़े हैं। उसकी मुसकान और ममता कवि को निरंतर घेरती रहती हैं। वह अपनी उपलब्धियों और अंतःचेतना में भी प्रिय का योगदान देखता है। इसलिए वह कहीं भी अपने को उस प्रभाव से स्वतंत्र नहीं पाता।

चरण 2: भूलने की इच्छा का कारण स्पष्ट कीजिए प्रिय की ममता इतनी व्यापक और प्रबल हो गई है कि कवि को उसका घिराव सहन नहीं होता। वह इस निकटता में घुटन तथा अपनी स्वतंत्र सत्ता पर दबाव अनुभव करता है। अतः वह प्रिय को भूलने का दंड माँगता है, ताकि उस निरंतर छाया से बाहर आ सके। यह इच्छा घृणा या कृतघ्नता नहीं है; वह ममता के अतिरेक से कुछ मुक्ति चाहता है।

चरण 3: इस इच्छा की विडंबना पहचानिए कवि विस्मृति और गहरे अंधकार में आश्रय चाहता है, फिर भी उसे लगता है कि वहाँ भी प्रिय का ही सहारा मिलेगा। यह स्थिति बताती है कि प्रिय का प्रभाव उसके भीतर कितना गहरा है। जिसे वह भूलना चाहता है, वही उसके व्यक्तित्व का अभिन्न आधार बन चुका है। इसीलिए भूलने की आकांक्षा में भी आत्मीयता और असहायता साथ-साथ प्रकट होती हैं।

चरण 4: निष्कर्ष कवि प्रिय को इसलिए भूलना चाहता है कि उसकी अत्यधिक ममता और सर्वव्यापी प्रभाव से उसे घुटन होती है तथा अपनी स्वतंत्र सत्ता संकट में लगती है। फिर भी प्रिय उसके अस्तित्व में इतना रचा-बसा है कि उससे पूर्ण मुक्ति कठिन है।

त्वरित सुझाव: कारण लिखते समय प्रेम के अभाव की बात न करें; ममता का अतिरेक, कवि की घुटन और विस्मृति की कठिनाई को क्रम से जोड़ें।

10(ख). "'बादल राग' कविता समाज के शोषित वर्ग को उसका स्वत्व प्रदान करने का एक उपादान है," इस कथन की सोदाहरण पुष्टि कीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता में बादल क्रांति, नवजीवन और परिवर्तन के प्रतीक हैं; छोटे पौधे तथा कृषक शोषित जन का प्रतिनिधित्व करते हैं।
- काव्य-प्रतीकों को किसान की वास्तविक दीन दशा से जोड़कर स्वत्व, अर्थात अपने अधिकार और सम्मान, की स्थापना समझनी चाहिए।

चरण 1: प्रतीकों का सामाजिक अर्थ निराला के बादल केवल वर्षा करने वाले प्राकृतिक बादल नहीं हैं। उनका गर्जन जड़ व्यवस्था को हिलाने वाली क्रांति का स्वर है। बादल के आगमन से छोटे पौधे प्रसन्न होते हैं, जबकि अट्टालिकाओं में रहने वाला संपन्न वर्ग भयभीत होता है। छोटे पौधों की प्रसन्नता वंचित लोगों की आशा व्यक्त करती है; संपन्न वर्ग का भय बताता है कि परिवर्तन उसकी अन्यायपूर्ण सुविधाओं को चुनौती देगा।

चरण 2: कृषक की पुकार और अधिकार-बोध कविता का कृश, दुर्बल और शोषण से रसहीन हो चुका कृषक बादल को विप्लव का वीर कहकर बुलाता है। उसने श्रम किया है, पर जीवन के साधनों और सुख से वंचित रहा है। बादल से उसकी आशा केवल खेतों के लिए पानी पाने की नहीं, बल्कि शोषण से मुक्ति और नए जीवन की है। कवि उसकी पीड़ा को मुखर करके उसे परिवर्तन का अधिकारी बनाते हैं। इस प्रकार कविता पीड़ितों के पक्ष में जनचेतना जगाती है और उनकी गरिमा को प्रतिष्ठित करती है।

चरण 3: निष्कर्ष बादल का क्रांतिकारी रूप, छोटे पौधों का उल्लास और शोषित कृषक की पुकार सिद्ध करते हैं कि कविता वंचित वर्ग को अधिकार, सम्मान तथा नवजीवन दिलाने की चेतना का उपादान है।

त्वरित सुझाव: बादल, छोटे पौधे, अट्टालिका और कृषक—इन चार बिंबों का सामाजिक अर्थ जोड़कर उदाहरण सहित उत्तर लिखें।

10(ग). राम को साधारण मनुष्य की भाँति विलाप और प्रलाप करते हुए दिखाने में कवि का क्या उद्देश्य हो सकता है ? कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- तुलसीदास राम के चरित्र में दिव्यता के साथ सहज मानवीय संवेदना को भी प्रतिष्ठित करते हैं।
- भ्रातृप्रेम, वियोग की वेदना और असहायता का चित्रण करुण रस उत्पन्न करता है।

चरण 1: सहज भ्रातृप्रेम को सामने लाना लक्ष्मण के मूर्च्छित होने पर राम का धैर्य टूट जाता है। वे उनके प्रेम, सेवा और अपने लिए किए गए त्याग को याद करते हैं। राम के साथ वन आने के लिए लक्ष्मण ने माता-पिता तथा अपने सुख तक छोड़ दिए थे। राम को यह चिंता भी होती है कि लक्ष्मण के बिना जीवन कैसे चलेगा और वे अयोध्या लौटकर माता सुमित्रा को क्या उत्तर देंगे। ये विचार किसी प्रिय भाई को खो देने की आशंका से व्याकुल साधारण मनुष्य के विचार हैं।

चरण 2: पाठक को करुणा और आत्मीयता से जोड़ना कवि का उद्देश्य राम को संवेदनाहीन, हर संकट से अप्रभावित शक्ति के रूप में दिखाना नहीं, बल्कि प्रेम करने वाले हृदय के रूप में सामने लाना है। विलाप से यह स्पष्ट होता है कि आदर्श और महान व्यक्ति भी आत्मीय संबंधों के दुख को गहराई से अनुभव करते हैं। राम की असहायता पाठक में करुणा जगाती है और उनके प्रति आत्मीयता बढ़ाती है। साथ ही लक्ष्मण के अनुपम त्याग तथा दोनों भाइयों के अटूट संबंध का महत्व उजागर होता है। राम की यह कोमलता उनके आदर्श चरित्र को अधिक सजीव बनाती है।

चरण 3: निष्कर्ष राम का मानवीय विलाप भ्रातृप्रेम की गहराई, लक्ष्मण के त्याग और वियोग की पीड़ा को सजीव करता है। इसके द्वारा तुलसीदास करुण रस जगाकर राम के आदर्श चरित्र को पाठक के निकट लाते हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में लक्ष्मण का त्याग, सुमित्रा को उत्तर देने की चिंता और करुण रस—तीनों को उद्देश्य से जोड़ें।

---

11. रात्रि की विभीषिका को सिर्फ़ पहलवान की ढोलक ही ललकारकर चुनौती देती रहती थी । पहलवान संध्या से सुबह तक, चाहे जिस खयाल से ढोलक बजाता हो, किंतु गाँव के अर्द्धमृत, औषधि-उपचार-पथ्य-विहीन प्राणियों में वह संजीवनी शक्ति ही भरती थी । बूढ़े-बच्चे जवानों की शक्तिहीन आँखों के आगे दंगल का दृश्य नाचने लगता था । स्पंदन-शक्ति-शून्य स्नायुओं में भी बिजली दौड़ जाती थी । अवश्य ही ढोलक की आवाज़ में न तो बुखार हटाने का कोई गुण था और न महामारी की सर्वनाश शक्ति को रोकने की शक्ति ही, पर इसमें संदेह नहीं कि मरते हुए प्राणियों को आँख मूँदते समय कोई तकलीफ़ नहीं होती थी, मृत्यु से वे डरते नहीं थे । [8 अंक]

11(क). पहलवान की ढोलक किसे ललकारती थी और क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में ढोलक रात्रि की विभीषिका को चुनौती देने वाली जीवंत ध्वनि है।
- इसके प्रभाव को शारीरिक उपचार और मानसिक साहस के अंतर से समझना चाहिए।

चरण 1: चुनौती का लक्ष्य पहलवान की ढोलक रात्रि की विभीषिका को ललकारती थी। महामारी से ग्रस्त गाँव में रात केवल अंधकार का समय नहीं थी; वह बीमारी, मृत्यु की आशंका और निराशा के भयावह वातावरण का प्रतीक बन गई थी। औषधि, उपचार तथा पथ्य से वंचित लोगों की स्थिति अत्यंत दयनीय थी।

चरण 2: ललकारने का कारण ऐसे वातावरण में ढोलक की आवाज़ भय और निष्क्रियता के विरुद्ध साहस का स्वर बनती थी। उसका बजना लोगों में दंगल की स्मृति जगाता और निर्बल शरीरों में भी उत्साह भरता था। गद्यांश इसे संजीवनी शक्ति भरना कहता है। इसलिए उसकी चुनौती महामारी मिटाने की नहीं, उससे उपजे मानसिक आतंक और हार मान लेने की प्रवृत्ति का सामना करने की थी।

चरण 3: निष्कर्ष ढोलक महामारी से भयावह बनी रात्रि और उसके मृत्यु-आतंक को ललकारती थी, क्योंकि उसकी ध्वनि असहाय ग्रामीणों में जीने और संकट से जूझने का साहस भरती थी।

त्वरित सुझाव: किसे के उत्तर में रात्रि की विभीषिका और क्यों के उत्तर में भय के विरुद्ध जीवन-साहस स्पष्ट लिखें।

11(ख). मरणासन्न लोगों पर ढोलक का क्या प्रभाव पड़ता था ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश ढोलक की शक्ति को उत्साह, स्मृति और निर्भयता के स्तर पर व्यक्त करता है।
- उत्तर में रोग दूर होने का दावा किए बिना उसके मानसिक प्रभाव बताने चाहिए।

चरण 1: जीवन-ऊर्जा का संचार ढोलक की ध्वनि सुनकर गाँव के बूढ़ों, बच्चों और जवानों की शक्तिहीन आँखों के सामने दंगल का दृश्य नाचने लगता था। उस दृश्य की स्मृति से निष्प्राण-से स्नायुओं में भी बिजली दौड़ने जैसी स्फूर्ति अनुभव होती थी। इस प्रकार शरीर से टूटे लोगों के मन में कुछ समय के लिए उत्साह और जीवन का स्पंदन लौट आता था।

चरण 2: मृत्यु के भय में कमी मरणासन्न लोगों को ढोलक मानसिक सहारा देती थी। वे मृत्यु से डरते नहीं थे और आँखें मूँदते समय वैसी व्याकुलता अनुभव नहीं करते थे। लेखक स्पष्ट करता है कि ढोलक में बुखार हटाने अथवा महामारी रोकने की शक्ति नहीं थी। इसलिए उसके प्रभाव का आशय रोगमुक्ति नहीं, बल्कि अंतिम क्षणों तक भय के स्थान पर धैर्य और आत्मबल मिलना है।

चरण 3: निष्कर्ष ढोलक मरणासन्न लोगों में स्फूर्ति और साहस भरती थी। उसके कारण मृत्यु का भय घटता था और वे अपेक्षाकृत शांत तथा निर्भय होकर अंतिम क्षणों का सामना कर पाते थे।

त्वरित सुझाव: दंगल की स्मृति से उत्साह और मृत्यु का भय घटने से शांति—इन दोनों प्रभावों को अलग-अलग बताएं।

11(ग). लेखक ने दंगल के दृश्य की चर्चा किस उद्देश्य से की है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- दंगल का दृश्य सामर्थ्य, संघर्ष और साहस का परिचायक है।
- स्मृति के इस बिंब से रोगग्रस्त लोगों पर ढोलक की प्रेरक शक्ति स्पष्ट होती है।

चरण 1: बीते सामर्थ्य का स्मरण लेखक दंगल के दृश्य की चर्चा करके बताता है कि ढोलक सुनते ही ग्रामीणों के मन में पहलवानों के संघर्ष, दाँव-पेंच और उत्साहपूर्ण वातावरण की छवि उभर आती थी। दंगल में शक्ति और प्रतिरोध का अनुभव होता है। उस स्मृति के सामने वर्तमान की बीमारी और निर्बलता कुछ क्षणों के लिए पीछे छूट जाती थी।

चरण 2: ढोलक के प्रभाव को मूर्त बनाना गद्यांश में शक्तिहीन आँखों के सामने दंगल नाचने और स्पंदनहीन स्नायुओं में बिजली दौड़ने का वर्णन है। इन बिंबों से लेखक मन में लौटते उत्साह को प्रत्यक्ष अनुभव जैसा बना देता है। उद्देश्य दंगल का अलग वर्णन करना नहीं, यह दिखाना है कि ढोलक लोगों की सोई संघर्ष-चेतना जगाती थी। रोग से जूझते ग्रामीण उससे साहस पाते थे, यद्यपि उनकी शारीरिक बीमारी बनी रहती थी।

चरण 3: निष्कर्ष दंगल के दृश्य का उल्लेख ढोलक की प्रेरणाशक्ति को स्पष्ट करता है। संघर्ष और शक्ति की स्मृति ग्रामीणों में उत्साह जगाकर उन्हें निराशा तथा मृत्यु-भय से लड़ने का मानसिक बल देती थी।

त्वरित सुझाव: दंगल का वर्णन दोहराने के बजाय उसकी स्मृति को वर्तमान रोगग्रस्त लोगों के साहस से जोड़कर उद्देश्य समझाएं।

11(घ). महामारी की सर्वनाशक शक्ति के सामने ढोलक की भूमिका समझाइए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश शारीरिक विनाश के सामने मानसिक प्रतिरोध और जीवन-चेतना के महत्व को रेखांकित करता है।

- ढोलक की सीमा और उसके योगदान—दोनों का उल्लेख संतुलित व्याख्या के लिए आवश्यक है।

चरण 1: ढोलक की वास्तविक सीमा महामारी की सर्वनाशक शक्ति को रोकने में ढोलक समर्थ नहीं थी। उससे न बुखार उतरता था, न औषधि, उपचार या पथ्य की कमी पूरी होती थी। लेखक स्वयं यह सीमा स्पष्ट करता है, इसलिए ढोलक को बीमारी मिटाने वाला चमत्कारी साधन मानना गद्यांश के विरुद्ध होगा।

चरण 2: मानसिक प्रतिरोध की भूमिका फिर भी ढोलक का स्वर बीमारी और मृत्यु के आतंक के बीच जीवन की उपस्थिति बनाए रखता था। वह लोगों की आँखों के सामने दंगल का दृश्य जगाता, निर्बल शरीरों में स्फूर्ति का अनुभव कराता और साहस भरता था। मृत्यु निकट होने पर भी वे भयभीत नहीं होते थे। इस प्रकार महामारी शरीरों को नष्ट कर रही थी, जबकि ढोलक मनुष्य के मन को निराशा के सामने पूरी तरह पराजित होने से बचाती थी।

चरण 3: निष्कर्ष महामारी को रोक न सकने पर भी ढोलक का योगदान महत्वपूर्ण था। वह ग्रामीणों को मानसिक संबल, उत्साह और निर्भयता देती थी तथा विनाश के बीच मानवीय जिजीविषा को जीवित रखती थी।

त्वरित सुझाव: भूमिका बताते समय पहले रोग न रोक पाने की सीमा, फिर भय घटाकर साहस देने की शक्ति स्पष्ट करें।

अथवा

11. भारतीय कला और सौन्दर्यशास्त्र को कई रसों का पता है, उनमें से कुछ रसों का किसी कलाकृति में साथ-साथ पाया जाना श्रेयस्कर भी माना गया है, जीवन में हर्ष और विषाद आते रहते हैं यह संसार की सारी सांस्कृतिक परंपराओं को मालूम है, लेकिन करुणा का हास्य में बदल जाना एक ऐसे रस-सिद्धान्त की माँग करता है जो भारतीय परंपराओं में नहीं मिलता । 'रामायण' और 'महाभारत' में जो हास्य है वह दूसरों पर है और अधिकांशतः वह परसंताप से प्रेरित है । जो करुणा है वह अक्सर सद्व्यक्तियों के लिए और कभी-कभार दुष्टों के लिए है । संस्कृत नाटकों में जो विदूषक है वह राजव्यक्तियों से कुछ बदतमीज़ियाँ अवश्य करता है, किंतु करुणा और हास्य का सामंजस्य उसमें भी नहीं है । अपने ऊपर हँसने और दूसरों में भी वैसा ही माद्दा पैदा करने की शक्ति भारतीय विदूषक में कुछ कम ही नज़र आती है । [8 अंक]

11(क). भारत में हास्य रस को परसंताप से प्रेरित क्यों कहा गया है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- परसंताप का अर्थ दूसरे के कष्ट या असहज स्थिति से उत्पन्न सुख है।
- गद्यांश में दूसरों पर हँसने और अपने ऊपर हँसने के बीच भेद किया गया है।

चरण 1: परसंताप का आशय परसंताप से प्रेरित हास्य में हँसने वाला व्यक्ति स्वयं हँसी का विषय नहीं बनता। वह दूसरे की दुर्बलता, संकट या उपहासपूर्ण स्थिति को देखकर मनोरंजन करता है। इसलिए उस हास्य में दूसरे के प्रति समानुभूति का भाव प्रधान नहीं होता।

चरण 2: गद्यांश से पुष्टि लेखक के अनुसार रामायण और महाभारत का हास्य अधिकतर दूसरों पर केंद्रित है। वहाँ हँसी प्रायः दूसरे को उपहास का पात्र बनाने से पैदा होती है। अपने ऊपर हँसकर दूसरों में भी आत्मपरिहास की क्षमता उत्पन्न करने की शक्ति भारतीय विदूषक में कम दिखाई देती है। इसी कारण यहाँ के हास्य को अधिकांशतः परसंताप से प्रेरित कहा गया है।

चरण 3: निष्कर्ष भारत के परंपरागत हास्य में प्रायः दूसरों की कठिनाई या उपहासपूर्ण दशा पर हँसा जाता है; इसलिए लेखक ने उसे परसंताप से प्रेरित कहा है।

त्वरित सुझाव: परसंताप समझाते समय दूसरों पर हँसने और अपने ऊपर हँसने का अंतर अवश्य लिखें।

11(ख). करुणा और हास्य का अभाव भारतीय परंपराओं के साथ क्यों नहीं दिखाई देता ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में करुणा तथा हास्य दोनों की उपस्थिति स्वीकार की गई है।
- दो रसों का अलग-अलग होना और करुणा का हास्य में बदलना भिन्न स्थितियाँ हैं।

चरण 1: दोनों भावों की उपस्थिति भारतीय परंपराएँ जीवन के हर्ष और विषाद को पहचानती हैं। भारतीय कला तथा सौन्दर्यशास्त्र में अनेक रस माने गए हैं और कुछ रसों का एक कलाकृति में साथ होना भी उचित माना गया है। इसलिए भारतीय परंपराओं में करुणा और हास्य का सर्वथा अभाव नहीं दिखाई देता।

चरण 2: गद्यांश में बताई गई सीमा लेखक की आपत्ति दोनों रसों के न होने पर नहीं, उनके विशेष सामंजस्य के न होने पर है। परंपरागत रचनाओं में हास्य प्रायः दूसरों पर होता है, जबकि करुणा सद्व्यक्तियों और कभी-कभार दुष्टों के लिए होती है। विदूषक में भी करुणा को हास्य में बदलने तथा अपने ऊपर हँसने की शक्ति कम है। इस प्रकार दोनों रस उपस्थित हैं, पर उनका अपेक्षित रूपांतरण नहीं दिखाई देता।

चरण 3: निष्कर्ष भारतीय परंपराएँ हर्ष-विषाद को जानती हैं, इसलिए करुणा और हास्य दोनों विद्यमान हैं; कमी करुणा के हास्य में बदलने वाले विशिष्ट सामंजस्य की है।

त्वरित सुझाव: प्रश्न के अभाव शब्द का उत्तर देते हुए रसों की उपस्थिति और उनके सामंजस्य की कमी को अलग स्पष्ट करें।

11(ग). भारतीय सौन्दर्यशास्त्र में सामान्यतः करुणा के पात्र कौन हैं और क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश करुणा के सामान्य पात्रों के रूप में सद्व्यक्तियों का उल्लेख करता है।
- उत्तर में गद्यांश की सीमा और उसके अक्सर तथा कभी-कभार वाले अंतर का ध्यान रखना चाहिए।

चरण 1: सामान्य पात्र पहचानना भारतीय सौन्दर्यशास्त्र में सामान्यतः सद्व्यक्ति करुणा के पात्र होते हैं। गद्यांश में स्पष्ट कहा गया है कि करुणा अक्सर सद्व्यक्तियों के लिए होती है और कभी-कभार दुष्टों के लिए भी होती है। अतः केवल दुष्टों को करुणा का पात्र मानना अथवा उन्हें पूरी तरह बाहर रखना, दोनों ही पाठ के अनुसार उचित नहीं हैं।

चरण 2: करुणा का कारण समझना सद्व्यक्तियों के दुःख और संकट पाठक या दर्शक में सहानुभूति जगाते हैं। उनके प्रति उत्पन्न संवेदना करुणा का आधार बनती है। गद्यांश इसी प्रवृत्ति को हास्य से अलग रखकर बताता है: करुणा प्रायः सद्व्यक्तियों की ओर जाती है, जबकि हास्य अधिकतर दूसरों पर होता है। इस कथन से करुणा के सामान्य पात्र और उसकी सहानुभूतिपूर्ण प्रकृति स्पष्ट होती है।

चरण 3: निष्कर्ष सामान्यतः दुःख झेलने वाले सद्व्यक्ति करुणा के पात्र हैं, क्योंकि उनके प्रति सहानुभूति उत्पन्न होती है; कभी-कभार दुष्टों के प्रति भी करुणा होती है।

त्वरित सुझाव: अक्सर सद्व्यक्तियों और कभी-कभार दुष्टों का उल्लेख करें; पाठ में दिए अनुपात को न उलटें।

11(घ). विदूषक का क्या तात्पर्य है ? भारतीय विदूषक की विशेषता क्या बताई गई है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विदूषक संस्कृत नाटकों का हास्य उत्पन्न करने वाला पात्र है।

- लेखक ने उसकी हास्य क्षमता के साथ आत्मपरिहास तथा करुणा के सामंजस्य की सीमा बताई है।

चरण 1: विदूषक का अर्थ विदूषक नाटक का ऐसा पात्र होता है जो अपनी चतुर बातों, चेष्टाओं और विनोद से हास्य उत्पन्न करता है। प्रस्तुत गद्यांश में विशेष रूप से संस्कृत नाटकों के विदूषक की चर्चा है। वह राजव्यक्तियों से कुछ बदतमीज़ियाँ करने का साहस भी करता है और इस प्रकार उनके साथ विनोदपूर्ण व्यवहार करता है।

चरण 2: भारतीय विदूषक की विशेषता और सीमा भारतीय विदूषक दूसरों को हँसाता है, किंतु लेखक के अनुसार उसमें करुणा और हास्य का सामंजस्य नहीं है। अपने ऊपर हँसने और दूसरों में भी वैसी क्षमता पैदा करने की शक्ति उसमें कम दिखाई देती है। इसलिए उसके हास्य में आत्मपरिहास की अपेक्षा दूसरों पर केंद्रित विनोद अधिक है। लेखक ने उसके राजव्यक्तियों से विनोद करने की छूट और आत्मपरिहास की इस कमी, दोनों को रेखांकित किया है।

चरण 3: निष्कर्ष विदूषक हास्य पैदा करने वाला नाट्यपात्र है। भारतीय विदूषक राजव्यक्तियों से विनोद करता है, पर उसमें आत्मपरिहास और करुणा-हास्य का सामंजस्य कम है।

त्वरित सुझाव: पहले विदूषक का अर्थ दें, फिर राजव्यक्तियों से व्यवहार और आत्मपरिहास की कमी दोनों लिखें।

12(क). 'मन खाली तथा जेब भरी' से लेखक का क्या आशय है ? 'बाज़ार दर्शन' के आधार पर स्पष्ट कीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- बाज़ार दर्शन में खरीदारी का संबंध वास्तविक आवश्यकता और मन के संयम से है।
- खाली मन आवश्यकता के निश्चित बोध से रहित मन है, जबकि भरी जेब क्रयशक्ति का संकेत है।

चरण 1: मन खाली और जेब भरी का अर्थ मन खाली होने से लेखक का आशय ऐसी मानसिक स्थिति से है जिसमें व्यक्ति को यह स्पष्ट नहीं होता कि उसे वास्तव में क्या चाहिए। उसके पास आवश्यकता की निश्चित दिशा और आत्मसंयम का अभाव होता है। जेब भरी होने का अर्थ उसके पास खरीदारी के लिए पर्याप्त धन होना है। इस प्रकार व्यक्ति के पास धन तो है, लेकिन उस धन का उचित उपयोग करने के लिए जरूरत की स्पष्ट पहचान नहीं है।

चरण 2: बाज़ार के आकर्षण का प्रभाव ऐसा व्यक्ति बाज़ार की चमक-दमक और सजी हुई वस्तुओं से जल्दी प्रभावित होता है। उसे हर आकर्षक वस्तु खरीदने योग्य लगने लगती है। धन की उपलब्धता उसकी इच्छा को तुरंत खरीद में बदल देती है। परिणामस्वरूप वह उपयोगिता के बजाय आकर्षण के आधार पर अनावश्यक वस्तुएँ खरीद लेता है। बाज़ार का जादू इसी असंयमित मन पर अधिक प्रभाव डालता है।

चरण 3: पाठ का जीवन-संदेश लेखक का संकेत है कि बाज़ार जाते समय मन अपनी वास्तविक आवश्यकता के ज्ञान से भरा होना चाहिए। तब धन होने पर भी व्यक्ति हर वस्तु का मोह नहीं करता और जरूरत भर सामान लेता है। इस विचार में धन रखने की निंदा नहीं है; चेतावनी उस अविवेक के प्रति है जो धन और खाली मन के मेल से उत्पन्न होता है। आवश्यकता का बोध व्यक्ति को बाज़ार से उपयोगी संबंध बनाने में सहायता देता है।

चरण 4: निष्कर्ष मन खाली तथा जेब भरी का आशय है पर्याप्त धन होने पर भी अपनी जरूरत का स्पष्ट ज्ञान न होना। ऐसी स्थिति में बाज़ार का आकर्षण व्यक्ति से अनावश्यक खरीदारी करवाता है।

त्वरित सुझाव: खाली मन को विचारहीन आवश्यकता-बोध और भरी जेब को क्रयशक्ति से जोड़कर उनका संयुक्त परिणाम बताइए।

12(ख). भक्तिन की तुलना आँगन में खिलने वाले गुलाब आदि से क्यों की गई है ? लेखिका उसे सेविका का दर्जा देने को क्यों तैयार नहीं है ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भक्तिन में महादेवी वर्मा ने सेवा से आगे बढ़कर आत्मीय मानवीय संबंध का चित्रण किया है।
- फूलों की तुलना व्यक्ति की स्वतंत्र पहचान और संबंध की सहजता को स्पष्ट करती है।

चरण 1: गुलाब आदि की तुलना का आधार भक्तिन लेखिका के जीवन में आँगन में अपने ढंग से खिलने वाले गुलाब आदि की तरह सहज रूप से उपस्थित है। फूल केवल किसी के काम आने या न आने से अपना महत्त्व नहीं पाते; उनका अपना अस्तित्व और स्वाभाविक संबंध होता है। इसी प्रकार भक्तिन का मूल्य केवल उसके द्वारा किए जाने वाले घरेलू कामों से निर्धारित नहीं किया जा सकता। वह अपनी विशिष्ट पहचान के साथ लेखिका के जीवन का आत्मीय अंग बन गई है।

चरण 2: सेविका का दर्जा अपर्याप्त क्यों सेवक और स्वामी का संबंध सामान्यतः आदेश देने तथा उसे मानने पर आधारित होता है। भक्तिन और लेखिका के बीच यह व्यवस्था पूरी तरह लागू नहीं होती। लेखिका भक्तिन को जबरन सेवक नहीं बना सकती और भक्तिन भी लेखिका को परंपरागत स्वामी नहीं बनने देती। अपनेपन के कारण दोनों के बीच अधिकार, देखभाल और सहयोग का संबंध बन गया है, जो मात्र नौकरी की सीमा से बहुत आगे है।

चरण 3: लेखिका की दृष्टि भक्तिन अपने व्यक्तित्व को लेखिका के अनुरूप बनाने का प्रयत्न करती है और लेखिका के जीवन पर भी अपना प्रभाव डालती है। इस परस्पर प्रभाव और स्नेह में उसके स्वतंत्र व्यक्तित्व का सम्मान है। इसलिए लेखिका उसे केवल सेविका कहकर संबंध को छोटा नहीं करना चाहती। गुलाब आदि की तुलना इसी सहज आत्मीयता और उपयोगिता से परे महत्त्व को उजागर करती है।

चरण 4: निष्कर्ष भक्तिन गुलाब आदि की तरह लेखिका के जीवन का सहज और आत्मीय हिस्सा है। उनका संबंध आदेश और सेवा तक सीमित नहीं है, इसलिए लेखिका उसे केवल सेविका का दर्जा नहीं देती।

त्वरित सुझाव: तुलना में सहज उपस्थिति और उत्तर के दूसरे भाग में स्वामी-सेवक की सीमा से आगे बढ़ा अपनापन स्पष्ट करें।

12(ग). "जमीन तो बँट सकती है पर हृदय नहीं" 'नमक' कहानी के आधार पर इस कथन की पुष्टि कीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- राजनीतिक सीमा भूमि को बाँटती है; स्मृति, स्नेह और सांस्कृतिक संबंध मनुष्य के हृदय में बने रहते हैं।
- कहानी में नमक वतन की मिट्टी और साझी जीवन-संस्कृति का प्रतीक है।

चरण 1: कथन का आशय देश-विभाजन से भारत और पाकिस्तान के बीच राजनीतिक सीमा बन गई, किंतु लोगों के मन में बसे अपने पुराने नगर, परिचित और संबंध समाप्त नहीं हुए। मनुष्य का लगाव सरकारी नक्शे से निर्धारित नहीं होता। इसीलिए जमीन के बँट जाने के बाद भी हृदय की आत्मीयता बनी रहती है।

चरण 2: कहानी से पुष्टि पाकिस्तान से आई सिख बीबी लाहौर को अपना वतन मानती हैं और सफिया से वहाँ का नमक लाने का अनुरोध करती हैं। नमक उनके लिए साधारण खाद्य पदार्थ नहीं, छूटे हुए घर और अपनी जन्मभूमि की स्मृति है। सफिया उनकी भावना का सम्मान करके नमक लाती है। सीमा के दोनों ओर के कस्टम अधिकारियों का मानवीय व्यवहार भी बताता है कि अपने पुराने वतन का प्रेम राष्ट्रीय सीमाओं के पार जीवित है।

चरण 3: मानवीय संदेश इन पात्रों के धर्म और वर्तमान देश अलग हैं, फिर भी वे एक-दूसरे के दुख तथा लगाव को समझते हैं। कहानी किसी राजनीतिक विवाद की अपेक्षा मनुष्यों की साझा संवेदना को सामने लाती है। वतन की याद और दूसरों के प्रति सहानुभूति विभाजन की कठोरता को कमजोर करती हैं।

चरण 4: निष्कर्ष अतः नमक, स्मृतियों और पात्रों के आत्मीय व्यवहार के माध्यम से कहानी सिद्ध करती है कि राजनीतिक विभाजन

हृदय के संबंधों को नहीं बाँट सकता।

त्वरित सुझाव: उत्तर में सिख बीबी की लाहौर के नमक की इच्छा को वतन की स्मृति से अवश्य जोड़ें।

12(घ). शिरीष के माध्यम से लेखक ने जीवन और मृत्यु के यथार्थ को कैसे समझाया है ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रकृति का जीवन निरंतर परिवर्तनशील है; पुरानी अवस्था का अंत नए जीवन के लिए स्थान बनाता है।
- शिरीष की मस्ती और अनासक्ति जीवन की कठिनाइयों का सामना करने की प्रेरणा देती है।

चरण 1: पुराने और नए का संबंध शिरीष के पुराने फल वृक्ष से चिपके रहते हैं। नई कोंपलें आने पर ही वे हटते हैं। लेखक इनके माध्यम से उन लोगों पर व्यंग्य करते हैं जो अपनी शक्ति समाप्त होने पर भी अधिकार और स्थान छोड़ना नहीं चाहते। वे जीवन के स्वाभाविक परिवर्तन को स्वीकार नहीं करते।

चरण 2: जीवन और मृत्यु का यथार्थ संसार में किसी व्यक्ति या अवस्था का स्थायी अधिकार नहीं है। मृत्यु अनिवार्य है और नई पीढ़ी का आगमन भी उतना ही स्वाभाविक है। पुराने को एक दिन नए के लिए जगह छोड़नी पड़ती है। इसलिए मृत्यु के भय से जीवन को जकड़ना या परिवर्तन से बचना व्यर्थ है। प्रकृति का प्रवाह किसी के आग्रह से रुकता नहीं।

चरण 3: जीवन जीने की सीख शिरीष प्रचंड गर्मी में भी कोमल फूल देता है। उसकी सहज प्रसन्नता बताती है कि कठिन परिस्थितियों में भी जीवंत और सरस रहा जा सकता है। लेखक अनावश्यक मोह छोड़कर, परिवर्तन को स्वीकार कर और दूसरों को आनंद देकर जीने की प्रेरणा देते हैं। इस दृष्टि से मृत्यु की निश्चितता जीवन से पलायन नहीं, उसे सार्थक बनाने का आधार बनती है।

चरण 4: निष्कर्ष शिरीष का संदेश है कि मृत्यु और परिवर्तन को स्वीकार करके अनासक्त, प्रसन्न तथा सक्रिय जीवन जिया जाए; पुराने का हटना नए जीवन की स्वाभाविक शर्त है।

त्वरित सुझाव: पुराने फलों के चिपके रहने और गर्मी में खिलते फूलों के प्रसंग अलग-अलग समझाकर संदेश जोड़ें।

12(ङ). मेंढक मण्डली पर जीजी के तर्क के बारे में अपने विचार व्यक्त कीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- जीजी की दृष्टि में दान, त्याग और सामूहिक आस्था का महत्त्व है।
- लोकविश्वास के मानवीय पक्ष और उसके वैज्ञानिक प्रमाण में अंतर करना आवश्यक है।

चरण 1: जीजी का तर्क लेखक को सूखे के समय मेंढक मंडली पर पानी डालना पानी की बरबादी लगता है। जीजी का तर्क है कि किसी से कुछ पाने से पहले देना पड़ता है। जैसे किसान अच्छी फसल पाने के लिए बीज धरती में डालता है, वैसे ही थोड़ा पानी देकर वर्षा की आशा करना त्याग का भाव है। संकट में अपने पास की प्रिय वस्तु देना ही सच्चा दान है।

चरण 2: तर्क का मानवीय पक्ष जीजी बच्चों की टोली के सामूहिक प्रयास, लोकपरंपरा और आशा को महत्त्व देती हैं। उनका विचार स्वार्थ छोड़ने और सबके कल्याण के लिए कुछ अर्पित करने की प्रेरणा देता है। वर्षा की प्रतीक्षा में परेशान समाज को ऐसे आयोजन एक साथ लाते हैं और निराशा में भरोसा देते हैं। इस संवेदना को केवल उपहास से खारिज करना उचित नहीं है।

चरण 3: मेरा मूल्यांकन मेरे विचार में जीजी की उदारता और त्याग की सीख स्वीकार करने योग्य है, लेकिन पानी डालने से वर्षा होने का वैज्ञानिक कारण सिद्ध नहीं होता। बीज बोने और इस अनुष्ठान के परिणामों में अंतर है। इसलिए परंपरा की सामूहिकता को बनाए रखते हुए जल-संरक्षण करना चाहिए। आशा के साथ विवेकपूर्ण प्रयत्न जुड़ें तो लोकजीवन की आस्था अधिक सार्थक बन सकती है।

चरण 4: निष्कर्ष जीजी का तर्क त्याग और लोककल्याण की दृष्टि से प्रेरक है; उसे वर्षा का वैज्ञानिक प्रमाण मानने के बजाय संवेदना, सहयोग और विवेक के साथ समझना चाहिए।

त्वरित सुझाव: पहले जीजी के दान और बीज वाले तर्क को स्पष्ट करें, फिर उसका संतुलित मूल्यांकन दें।

13. 'डायरी के पन्ने' में ऐन फ्रेंक ने महिलाओं की सामाजिक स्थिति पर जो विचार व्यक्त किए हैं, उनका विवेचन जीवन-मूल्यों की दृष्टि से कीजिए । आज उन मूल्यों और परिस्थितियों में कितना परिवर्तन आ सका है ? विस्तार से समझाइए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- स्त्री-पुरुष समानता का आधार समान मानवीय गरिमा, स्वतंत्रता और अवसर हैं।
- ऐन की दृष्टि स्त्रियों के श्रम, मातृत्व और व्यक्तित्व को सम्मान देने की माँग करती है।

चरण 1: ऐन की चिंता और सामाजिक स्थिति ऐन फ्रेंक स्त्रियों की अधीन स्थिति पर प्रश्न उठाती हैं। वे समझना चाहती हैं कि समाज में पुरुषों को अधिक अधिकार और प्रतिष्ठा क्यों मिली, जबकि स्त्रियाँ भी बुद्धि, साहस और श्रम में महत्त्वपूर्ण योगदान देती हैं। पुरुष की शारीरिक शक्ति को श्रेष्ठता का आधार मानकर स्त्री को कमतर समझना अन्यायपूर्ण है। उनका विचार स्त्री को स्वतंत्र व्यक्तित्व के रूप में स्वीकार करने की माँग करता है।

चरण 2: श्रम और मातृत्व का मूल्य ऐन स्त्रियों के जीवन के कष्टों और जिम्मेदारियों की ओर ध्यान दिलाती हैं। संतान को जन्म देना, उसका पालन-पोषण और परिवार की देखभाल साधारण काम नहीं हैं। इनके लिए धैर्य, साहस और सहनशक्ति चाहिए। फिर भी समाज प्रायः इस योगदान को स्वाभाविक कर्तव्य मानकर उसका पर्याप्त सम्मान नहीं करता। ऐन की दृष्टि में स्त्रियों का सम्मान केवल मातृत्व के कारण ही नहीं, मनुष्य होने के कारण भी आवश्यक है।

चरण 3: जीवन-मूल्यों की दृष्टि से विवेचन इन विचारों में न्याय, समानता, सहानुभूति और आत्मसम्मान के मूल्य निहित हैं। किसी व्यक्ति का मूल्यांकन उसके लिंग से नहीं, उसकी क्षमता और मानवीय गुणों से होना चाहिए। स्त्री को शिक्षा, निर्णय और अपनी प्रतिभा विकसित करने की स्वतंत्रता मिलनी चाहिए। परिवार तथा समाज में जिम्मेदारियों का न्यायपूर्ण बँटवारा भी समानता का अंग है। स्त्रियों की आवाज सुनना और उनके अनुभवों को महत्त्व देना मानवता की प्रगति का प्रमाण है।

चरण 4: आज का परिवर्तन और शेष चुनौती आज शिक्षा, रोजगार, सार्वजनिक जीवन और नेतृत्व में स्त्रियों की भागीदारी बढ़ी है। वे अनेक क्षेत्रों में अपनी योग्यता प्रमाणित कर रही हैं और अधिकारों के प्रति सजग हुई हैं। परिवारों में भी बेटियों की शिक्षा और स्वतंत्रता के समर्थन में परिवर्तन दिखाई देता है। फिर भी यह परिवर्तन हर जगह समान नहीं है। घरेलू काम का असमान बोझ, सुरक्षा की समस्या, भेदभाव और निर्णयों में कम भागीदारी जैसी बाधाएँ बनी हुई हैं। इसलिए केवल औपचारिक अधिकार पर्याप्त नहीं; व्यवहार और मानसिकता में समान सम्मान आवश्यक है।

चरण 5: निष्कर्ष ऐन के विचार आज भी प्रासंगिक हैं। स्त्री-समानता की दिशा में प्रगति हुई है, पर न्याय, स्वतंत्रता और सम्मान को दैनिक व्यवहार में उतारने से ही उनके अपेक्षित जीवन-मूल्य पूरी तरह साकार होंगे।

त्वरित सुझाव: उत्तर को ऐन के विचार, उनसे जुड़े जीवन-मूल्य और आज की उपलब्धियों तथा चुनौतियों के क्रम में रखें।

14(क). 'जूझ' कहानी के शीर्षक का औचित्य सिद्ध कीजिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- किसी रचना के शीर्षक का औचित्य उसके केंद्रीय कथ्य, प्रमुख पात्र के अनुभवों और जीवन-दृष्टि से सिद्ध होता है। 'जूझ' का अर्थ है कठिन परिस्थितियों से संघर्ष करना।
- आनंद यादव के आत्मकथात्मक पाठ में शिक्षा पाने और अपने व्यक्तित्व को विकसित करने की आकांक्षा आर्थिक कठिनाइयों तथा पारिवारिक विरोध के बीच आगे बढ़ती है।

चरण 1: शिक्षा के लिए बाहरी संघर्ष 'जूझ' का नायक पढ़ना चाहता है, पर उसके पिता उसे खेती के काम में लगाकर विद्यालय से दूर रखना चाहते हैं। घर की आर्थिक स्थिति और खेत का श्रम उसकी पढ़ाई के मार्ग में बाधा बनते हैं। विद्यालय जाने वाले बच्चों को देखकर उसकी अपनी छूटी हुई पढ़ाई की पीड़ा तीव्र होती है। वह अपनी इच्छा को दबाकर परिस्थितियों से समझौता नहीं करता। माँ का सहयोग और दत्ता जी राव की मध्यस्थता उसके लिए फिर विद्यालय जाने का रास्ता खोलते हैं। इसके लिए भी उसे खेती का काम करने और पढ़ाई के कारण काम की उपेक्षा न होने देने जैसी शर्तें स्वीकार करनी पड़ती हैं। इसलिए उसका विद्यालय पहुँचना सहज सुविधा का परिणाम नहीं, संघर्ष से अर्जित अवसर है।

चरण 2: विद्यालय में आत्मसम्मान और योग्यता का संघर्ष विद्यालय लौटने पर समस्याएँ समाप्त नहीं होतीं। पढ़ाई में आए अंतराल, अपनी ग्रामीण वेशभूषा और सहपाठियों के व्यवहार के कारण उसे संकोच और उपहास का सामना करना पड़ता है। वह निराश होकर विद्यालय छोड़ने के बजाय परिश्रम से अपना स्थान बनाने का प्रयत्न करता है। पढ़ने में रुचि रखने वाले सहपाठियों की संगति और अध्यापकों का प्रोत्साहन उसमें विश्वास जगाते हैं। इस प्रकार वह केवल बाहरी बाधाओं से ही नहीं, अपने भीतर की हीनता और झिझक से भी जूझता है।

चरण 3: श्रम के बीच सृजनशीलता का विकास मराठी के अध्यापक न. वा. सौंदलगेकर के कविता-पाठ से उसकी कल्पना और संवेदना जागती है। उसे अनुभव होता है कि अपने आसपास के जीवन पर भी कविता लिखी जा सकती है। खेत में काम करते और पशु चराते समय वह कविताएँ दोहराता है तथा अपनी पंक्तियाँ रचने का प्रयास करता है। जो श्रम पहले केवल बंधन लगता था, उसी के बीच अब उसे सृजन का अवसर दिखाई देता है। वह अभ्यास और लगन से अपने भीतर छिपी रचनात्मक शक्ति विकसित करता है। पाठ इस प्रकार अभावग्रस्त बालक के विद्यार्थी और भावी रचनाकार बनने की यात्रा प्रस्तुत करता है।

चरण 4: निष्कर्ष 'जूझ' शीर्षक संक्षिप्त, अर्थपूर्ण और पूरे पाठ के केंद्रीय अनुभव का प्रतिनिधि है। शिक्षा के लिए पारिवारिक प्रतिरोध से संघर्ष, विद्यालय में आत्मसम्मान की रक्षा और श्रम के बीच काव्य-प्रतिभा का विकास—इन सभी को यह एक शब्द समेटता है। यह संघर्षशीलता, लगन और परिस्थितियों पर विजय पाने की आकांक्षा को व्यक्त करता है; अतः शीर्षक पूर्णतः सार्थक है।

त्वरित सुझाव: शीर्षक का अर्थ बताकर परिवार, विद्यालय और कविता-सृजन से एक-एक ठोस प्रसंग जोड़िए; केवल 'जीवन में संघर्ष है' जैसा सामान्य कथन पर्याप्त नहीं है।

14(ख). ऐन फ्रैंक और पीटर के आपसी सम्बन्धों पर प्रकाश डालिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- 'डायरी के पन्ने' में ऐन फ्रैंक के निजी अनुभव युद्ध और यहूदी-विरोधी उत्पीड़न की पृष्ठभूमि में सामने आते हैं। उसके संबंधों को अज्ञातवास की घुटन और किशोर मन की आत्मीयता की आवश्यकता से जोड़कर समझना चाहिए।
- ऐन और पीटर का संबंध एक-दूसरे को समझने, मन की बात कहने और अकेलेपन से राहत पाने की प्रक्रिया में विकसित होता है। ऐन उसमें स्नेह के साथ अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व का महत्त्व भी पहचानती है।

चरण 1: अज्ञातवास में निकटता की पृष्ठभूमि ऐन फ्रैंक और पीटर दोनों अपने परिवारों के साथ छिपकर रहने के लिए विवश हैं। बाहर की दुनिया से कटे हुए जीवन में भय, अनिश्चितता और बड़ों की आपसी खींचतान बनी रहती है। ऐन को लगता है कि उसकी भावनाओं को पूरी तरह समझने वाला कोई नहीं है। ऐसी स्थिति में पीटर उसके लिए अपनी ही उम्र का ऐसा साथी बनता है जिसके सामने वह अपने

मन की बातें कह सकती है। आरंभ में दोनों के बीच वह गहरी निकटता नहीं होती जो आगे चलकर विकसित होती है। एक-दूसरे को जानने और बातचीत बढ़ने के साथ उनका संकोच कम होता है।

चरण 2: सहानुभूति, विश्वास और किशोर आकर्षण ऐन को पीटर के साथ समय बिताना अच्छा लगने लगता है। दोनों बातचीत में अपनी भावनाएँ, परेशानियाँ और अकेलापन साझा करते हैं। पीटर का साथ ऐन को आत्मीयता और मानसिक सहारा देता है; पीटर भी उसके स्नेह और समझ से अपने को कम अकेला अनुभव करता है। इस निकटता में किशोरावस्था का आकर्षण भी है। ऐन उसके पास जाना चाहती है और उससे मिलने की प्रतीक्षा करती है। अज्ञातवास की सीमित और तनावपूर्ण दुनिया में यह संबंध उसके लिए प्रसन्नता तथा आशा का स्रोत बनता है। इसे केवल समय बिताने की मित्रता कहना उसके भावनात्मक महत्त्व की उपेक्षा होगी।

चरण 3: संबंध के प्रति ऐन की आत्मसमीक्षा ऐन भावनाओं में बहकर संबंध को बिना सोचे स्वीकार नहीं करती। वह अपनी डायरी में अपने मन की जाँच करती है और समझती है कि पीटर तथा उसके व्यक्तित्व में भिन्नताएँ हैं। ऐन अपने भीतर बल पैदा करके आगे बढ़ना और स्वतंत्र व्यक्तित्व बनाना चाहती है। उसे पीटर में उस दृढ़ता की कमी अनुभव होती है जिसकी वह अपेक्षा करती है। इसलिए निकटता के बावजूद वह अपनी भावनात्मक निर्भरता और भविष्य को लेकर विचार करती रहती है। यह आत्मविश्लेषण बताता है कि उसका संबंध स्नेहपूर्ण होने के साथ जटिल भी है। उसमें विश्वास और आकर्षण हैं, लेकिन अपने विकास के प्रति ऐन की सजगता भी बनी रहती है।

चरण 4: निष्कर्ष ऐन और पीटर का संबंध अज्ञातवास के अकेलेपन में विकसित आत्मीय मित्रता और किशोर आकर्षण का संबंध है। दोनों एक-दूसरे को सहारा देते हैं, किंतु ऐन अपने स्वतंत्र अस्तित्व और दोनों के स्वभावगत अंतर को भी पहचानती है। इस संबंध से उसके संवेदनशील, प्रेमाकांक्षी और आत्मविश्लेषी व्यक्तित्व का परिचय मिलता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में अज्ञातवास की परिस्थिति, बढ़ता विश्वास और आकर्षण तथा ऐन की आत्मसमीक्षा—इन तीन पक्षों को जोड़िए; इसे केवल प्रेम-कथा तक सीमित मत कीजिए।